# एन सी बी
# दर्पण

NATIONAL COUNCIL FOR CEMENT AND BUILDING MATERIALS

NCB

न हि ज्ञानेन सदृशं


## राष्ट्रीय सीमेंट एवं भवन सामग्री परिषद

34 कि.मी. स्टोन, दिल्ली–मथुरा रोड (एनएच–2), बल्लबगढ़–121 004, हरियाणा

# एन सी बी हिंदी कार्यान्वयन समिति

बाएं से दायें : श्रीमती रश्मि गुप्ता, श्रीमती पूनम कनौजिया, श्रीमती यशिका भारद्वाज, श्रीमती नीरज कौशिक, श्री अभिषेक अग्निहोत्री (अध्यक्ष), डॉ बी एन महापात्र (महानिदेशक), श्रीमती मिथलेश शर्मा (अधिकारी), श्री हरे कृष्ण शर्मा, श्री राजीव कौशिक, श्री नरेंद्र सिंह, श्री इम्तियाज खान

*संपादक मंडल :*
*श्री अभिषेक अग्निहोत्री*
*श्रीमती रश्मि गुप्ता*
*श्रीमती पूनम कनोजिया*
*श्रीमती यशिका भारद्वाज*
*श्रीमती नीरज कौशिक*

"जिस देश को अपनी भाषा और अपने साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।"

— देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

बनावट एवं साज–सज्जा :
श्री अभिषेक अग्निहोत्री,
श्री इम्तियाज खान

महानिदेशक
राष्ट्रीय सीमेंट एवं भवन सामग्री परिषद

## सन्देश

किसी भी राष्ट्र की पहचान उसकी भाषा और उसकी संस्कृति से होती है हिंदी भाषा हमारे देश की धरोहर है। हिंदी भाषा भारत की संवैधानिक राजभाषा है। हिंदी भाषा का प्रयोग हीनता नहीं अपितु गौरव का प्रतीक है।

हिंदी भाषा विश्व की तीसरी और भारत में यह सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है किसी भी भाषा को राष्ट्रभाषा बनने के लिए उसमें सर्वव्यापकता, प्रचुर साहित्य रचना, बनावट की दृष्टि से सरलता और वैज्ञानिकता सब प्रकार के भाव को प्रकट करने का सामर्थ्य आदि गुण होने अनिवार्य है यह सभी गुण हिंदी भाषा में है। अगर हिंदी का विकास करना है तो लोगों को दूसरी भाषाओं को छोड़कर अपनी देश की राजभाषा को स्वीकार करना पड़ेगा। जिस तरह हम अपने तिरंगे का सम्मान करते हैं उसी प्रकार अपने देश की राजभाषा को भी सम्मान देना चाहिए।

एन.सी.बी. राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा वर्ष भर हिंदी के प्रचार–प्रसार हेतु विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये। हिंदी प्रतियोगिताएं, हिंदी कार्यशालाओं और विचार – संगोष्ठियों का आयोजन करके राजभाषा के प्रचार–प्रसार को बढ़ावा दिया जा रहा है।

एन.सी.बी. हिंदी कार्यान्वयन समिति कार्यालय में हिंदी के प्रचार प्रसार के लिये पूरी सत्य निष्ठा से प्रयासरत है। मेरा प्रयास है कि कार्यालय में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग हो सके। मेरा हिंदी राजभाषा समिति के सभी सदस्यों से आग्रह है कि हिंदी का निरंतर प्रयोग बढाने में अपना पूर्ण योगदान दें।

मैं एन.सी.बी. दर्पण के प्रथम अंक के सफल प्रकाशन के लिये हार्दिक शुभकामनायें देता हूँ और आशा करता हूँ कि हम इसी प्रकार राजभाषा के प्रचार–प्रसार को बढावा देते हुये राजभाषा हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग बढाने हेतु निरंतर प्रयत्नशील रहेंगे।

आइए हम सब मिलकर यह सिद्ध करें कि राजभाषा हिंदी जन–जन की भाषा बनकर देश की प्रगति में अपना योगदान देगी।

शुभकामनाओं सहित

बीबेकानन्द महापात्र
डॉ बीबेकानंद महापात्र

# संपादकीय

राष्ट्र अपनी राष्ट्रभाषा के बिना गूंगा है हमारे देश में हिंदी एकमात्र भाषा है जो राष्ट्र की वाणी है और राष्ट्र की अस्मिता की प्रतीक है।

हिंदी की महत्ता तभी स्थापित हो गई थी जब वह स्वाधीनता संग्राम के समय समूचे देश को आपस में जोड़ने वाली सबसे सशक्त संपर्क भाषा बन गई थी। उस दौर के सभी नेताओं का मानना था कि अगर कोई भारतीय भाषा देशवासियों को एकजुट करने में सहायक बन सकती है तो वह हिंदी ही है। हिंदी की सामर्थ्य को गांधी जी ने भी समझा और नेता जी सुभाषचंद्र बोस ने भी। आचार्य बिनोवा भावे ने कहा था कि यदि मैंने हिंदी का सहारा न लिया होता तो कश्मीर से कन्याकुमारी और असम से केरल तक के गांव–गांव में जाकर मैं भूदान, ग्राम–दान का संदेश जनता तक न पहुंचा पाता।

हिंदी ने राष्ट्रीय एकता का मार्ग प्रशस्त किया एवं यह भी बोध कराया कि भारत का विकास और राष्ट्रीय एकता की रक्षा प्रादेशिक भाषाओं के पूर्ण विकास से ही संभव है। हिंदी में वह शक्ति है कि वह अपने माध्यम से भारत को जोड़ सके। हिंदी को अपना स्थान अभी भी हासिल करना है। उसे इस मिथ्या धारणा को भी तोड़ना है कि विकास की भाषा तो अंग्रेजी ही है। अगर अंग्रेजी सचमुच विकास की भाषा होती तो पहले जापान और फिर जर्मनी और चीन ने अपनी भाषा में चमत्कारिक प्रगति न हासिल की होती।

एन.सी.बी. दर्पण का प्रथम अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है जिसमें साहित्य, संस्कृति, तकनीकी और प्रौद्योगिकी जैसे विभिन्न विषयों पर विविध प्रकार की ज्ञानवर्धक और रोचक सामग्री समाहित करने का प्रयास किया गया है आशा है। कि सभी पाठकों को यह अंक पसंद आएगा।

इस पत्रिका को और अधिक उपयोगी, ज्ञानवर्धक और रोचक बनाने के लिए हमें आपके सुझावों और प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

अभिषेक अग्निहोत्री

अध्यक्ष – एन.सी.बी. राजभाषा कार्यान्वयन समिति

# एनसीबी का परिचय

राष्ट्रीय सीमेंट एवं भवन सामग्री परिषद् (एनसीबी), भारत के सीमेंट अनुसंधान संस्थान (सीआरआई) 24 दिसंबर 1962 को सीमेंट और निर्माण सामग्री व्यापार और उद्योग से जुड़े अनुसंधान और वैज्ञानिक कार्यों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से स्थापित किया गया था

आज, एनसीबी प्रौद्योगिकी विकास, स्थानांतरण, सतत् शिक्षा और सीमेंट और निर्माण उद्योगों के लिए औद्योगिक सेवाओं के लिए भारत सरकार के वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में प्रमुख संस्था है। सरकार सीमेंट उद्योग की वृद्धि और विकास से संबंधित अपनी नीति और योजना गतिविधियों के निर्माण के लिए आवश्यक सहायता प्रदान करने के लिए एनसीबी नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करता है। यह देश में सीमेंट और कंक्रीट के उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा के लिए समर्पित है। एनसीबी के हितधारक सरकार, उद्योग और समाज हैं, जो राष्ट्रीय जिम्मेदारी का निर्वहन करने, क्रमशः पर्याप्त तकनीकी सहायता प्रदान करने और जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने में एनसीबी की भूमिका को समझते हैं।

भौगोलिक रूप से, एनसीबी का अपना सामाजिक केंद्र और मुख्य प्रयोगशालाएँ बल्लबगढ़ (नई दिल्ली के पास) में स्थित हैं; अन्य स्थापित क्षेत्रीय केंद्र, हैदराबाद, अहमदाबाद (गुजरात) और भुवनेश्वर (ओडिशा) में इकाइयाँ है। एनसीबी बल्लबगढ़, हैदराबाद और अहमदाबाद की इकाइयाँ आईएसओ 9001:2015 प्रमाणित हैं।

एनसीबी के सीमेंट निर्माण और उपयोग के पूरे स्पेक्ट्रम पर कार्य अवधि के क्षेत्रों – प्रक्रियाओं, मशीनरी, विनिर्माण पहलुओं, ऊर्जा और पर्यावरण संबंधी कारणों के माध्यम से वास्तविक निर्माण, सामग्री की निगरानी में अंतिम उपयोग के लिए कच्चे माल की भूवैज्ञानिक अन्वेषण के साथ शुरू और इमारतों और संरचनाओं का पुनर्वास। एनसीबी आईएसओ 17025 मान्यता प्राप्त परीक्षण और अंशांकन सेवाएं, आईएसओ 17043 मान्यता प्राप्त प्रवीणता परीक्षण (पीटी) सेवाएं और आईएसओ 17020 मान्यता प्राप्त निरीक्षण सेवाएं प्रदान करता है। यह प्रमाणित संदर्भ सामग्री (सीआरएम) सीमेंट और निर्माण क्षेत्र को विकसित और आपूर्ति करता है। मानव संसाधन विकास के लिए, अल्पावधि और दीर्घकालिक पाठ्यक्रमों के माध्यम से सीमेंट, कंक्रीट, और निर्माण सामग्री क्षेत्र में प्रशिक्षण सेवाएँ प्रदान करता है। सीमेंट प्रौद्योगिकी में पीजी डिप्लोमा पाठ्यक्रम एआईसीटीई द्वारा मान्यता प्राप्त है। एनसीबी औद्योगिक सूचना सेवाओं के क्षेत्र में, सीमेंट, कंक्रीट और निर्माण सामग्री पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित करता है। अब तक इस सेमिनार के 16 संस्करण आयोजित किए हैं। एनसीबी की सभी गतिविधियाँ छह केन्द्रों द्वारा संचालित होती हैं:

सीमेंट अनुसंधान और स्वतंत्र परीक्षण (सीआरटी)– सीमेंट और अन्य बाइंडरों, अपशिष्ट उपयोग, दुर्दम्य और सिरामिक, मौलिक और बुनियादी अनुसंधान के क्षेत्र में अनुसंधान गतिविधि के लिए केंद्र जिम्मेदार है। केंद्र सीमेंट और सीमेंट सामग्री और अन्य निर्माण सामग्री की परीक्षण गतिविधियों को भी देखता है।

खनन, पर्यावरण, संयंत्र इंजीनियरिंग और संचालन केंद्र (सीएमई)– भूविज्ञान, खनन और कच्चे माल, पर्यावरण प्रबंधन, प्रक्रिया उपयोग और उत्पादकता, ऊर्जा प्रबंधन, संयंत्र रखरखाव और परियोजना इंजीनियरिंग और सिस्टम डिजाइनिंग के क्षेत्र में केंद्र अपनी गतिविधि करता है।

**निर्माण विकास एवं अनुसंधान केंद्र (सीडीआर)–** संरचनात्मक मूल्यांकन और पुनर्वास, कंक्रीट प्रौद्योगिकी, निर्माण प्रौद्योगिकी और प्रबंधन और संरचनात्मक अनुकूलन और डिजाइन के क्षेत्र में अनुसंधान गतिविधियों के लिए केंद्र जिम्मेदार है।

**गुणवत्ता प्रबंधन, मानक एवं अंशांकन सेवा केंद्र (सीक्यूसी)–** प्रवीणता परीक्षण, मानकों संदर्भ सामग्री, अंशांकन सेवाओं और कुल गुणवत्ता प्रबंधन के क्षेत्र में केंद्र उद्योग को सेवाएं प्रदान करता है।

**औद्योगिक सूचना सेवा केंद्र (सीआईएस)–** सीआईएस आईटी इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रदान करता है। एनसीबी के प्रकाशनों, सेमिनारों और सम्मेलनों, अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय संपर्क और छवि निर्माण का काम भी केंद्र देखता है।

**सतत् शिक्षा सेवा केंद्र (सीसीई)–** सीमेंट, कंक्रीट और निर्माण के क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की आवश्यकता आधार, उद्योग–उन्मुख प्रशिक्षण कार्यक्रम केंद्र आयोजित करता है।

उपरोक्त छह सामाजिक केंद्रों की तकनीकी गतिविधियों का समर्थन करने के लिए एनसीबी के पास निम्नलिखित चार सेवा समूह हैं।

**वित्त एवं लेखा (एफएएस) –** दिन–प्रतिदिन की वित्तीय गतिविधियों के प्रबंधन के लिए एफएएस जिम्मेदार है

**मानव संसाधन और प्रशासनिक सेवा (एचआरएस) –** एचआरएस–जीईएन परिवहन के बुनियादी ढांचे और एचआरएस–पीईआर मानव संसाधन गतिविधि जैसे कि भर्ती, पदोन्नति, मूल्यांकन आदि प्रदान करता है।

**एस्टेट प्रबंधन और तकनीकी सेवाएं (ईटीएस)–** ईटीएस द्वारा कार्यक्षेत्र, उपयोगिताओं, उपकरण और संचार प्रौद्योगिकी अवसंरचना जैसे संसाधनों सहित बुनियादी ढांचे को बनाए रखा जाता है।

**सामग्री प्रबंधन सेवाएं (एमएमएस) –** एमएमएस संगठन के विभिन्न विभागों की आवश्यकताओं के अनुसार कच्चे माल सहित उपकरणों की खरीद के लिए जिम्मेदार है।

# हिन्दी पखवाडा समारोह

## 'हिन्दी पखवाड़ा – रिपोर्ट'

समारोह का आयोजन 'राष्ट्रीय सीमेंट एवं भवन सामग्री परिषद् (एनसीबी) में गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी हिन्दी पखवाड़े का आयोजन पूरे हर्षोल्लास के साथ 13–27 सितम्बर 2019 के दौरान आयोजित किया गया। इस पखवाड़े का शुभारंभ 13 सितम्बर 2019 को संयुक्त निदेशक व इकाई प्रभारी–बल्लबगढ़ श्री आशुतोष सक्सेना जी द्वारा उद्घाटन भाषण के साथ हुआ। कार्यक्रम के शुभारंभ के अवसर पर संस्थान के कर्मचारियों के अतिरिक्त एनसीबी राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री विनोद कुमार तथा अन्य पदाधिकारीगण मौजूद रहे। अपने उदघाटन भाषण में श्री सक्सेना ने सभी कर्मचारियों से निवेदन किया कि सभी लोग पूरे पखवाड़े अपने स्तर पर अधिकतम सरकारी कार्य हिन्दी में करें। राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार तथा संस्थान में हिन्दी के प्रति जागरूकता लाने के उद्देश्य से पखवाड़े के दौरान 05 हिन्दी प्रतियोगिताएं आयोजित की गयी थीं। जिनमे श्रुतलेखन व टिप्पणी लेखन, निबंध लेखन, हिन्दी शब्दकोश, स्वविचार और अनुवाद प्रतियोगिताएं शामिल थीं।

हिन्दी पखवाड़े का शुभारंभ करते हुए श्री आशुतोष सक्सेना जी ने हिन्दी की लोकप्रियता और आवश्यकता की चर्चा करते हुए इस बात पर बल दिया की हमें हिन्दी को अपनी दैनिक दिनचर्या में ज्यादा से ज्यादा लागू करना चाहिए, खासकर वे जो गैर–हिन्दी भाषी क्षेत्र से संबंध रखते हैं। उन्होने संस्थान में जारी हिन्दी राजभाषा समिति के कार्यों से संतोष व्यक्त किया तथा पदाधिकारियों का धन्यवाद किया। उन्होने संस्थान में शीघ्र ही हिन्दी लक्ष्यों की प्राप्ति के प्रति जागरूकता पर पूर्ण आश्वस्तता व्यक्त की। हिन्दी पखवाड़ा शुभारंभ के अवसर पर राजभाषा समिति के अध्यक्ष श्री विनोद कुमार ने अपने विचार प्रस्तुत किए तथा उपस्थित कर्मचारियों और अधिकारियों के समक्ष रेल और वाणिज्य उद्योग मंत्री, भारत सरकार, माननीय श्री पीयूष गोयल जी का हिन्दी दिवस पर प्राप्त संदेश पढ़कर सुनाया। इसके साथ पखवाड़े के आयोजन और सहयोग के लिए महानिदेशक डा. बी एन महापात्र जी एवं श्री सक्सेना जी का आभार प्रकट किया। श्री कुमार ने आगे प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए उन्हें प्रतियोगिता के नियमों से अवगत कराया और पुरस्कारों की जानकारी प्रदान की।

27 सितम्बर 2019 को 'हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह' पूरे हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया गया। जिसमें संस्थान के कर्मचारियों एवं अधिकारियों के अतिरिक्त महानिदेशक डा. बी एन महापात्र ने स्वयं भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ गणेश वंदना से हुआ और श्री विनोद कुमार ने सर्वप्रथम महानिदेशक डा. महापात्र जी का स्वागत करते हुए कार्यक्रम में उपस्थित होने के लिए उनका आभार जताया। तत्पश्चात, श्री कुमार ने माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार श्री अमित शाह जी का हिन्दी दिवस पर प्राप्त संदेश को पढ़ा तथा हिन्दी पखवाड़े के आयोजन पर समीक्षा और अध्यक्षीय भाषण पेश किया। इसके बाद श्रीमति मिथलेश शर्मा, हिन्दी अधिकारी द्वारा एनसीबी में हिन्दी की गतिविधियों व कार्यकलापों का व्यौरा पेश किया।

हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह के आयोजन पर एक अन्य स्वविचार प्रतियोगिता आयोजित की गयी। जिसमें 11 कर्मचारियों व अधिकारियों ने हिन्दी में अपनी रोचक प्रस्तुतियाँ दीं और जिसका मूल्यांकन संस्थान के तीन वरिष्ठ अधिकारियों के निर्णायक मण्डल द्वारा किया गया। सभी पाँच प्रतियोगिता के विजेताओं को एनसीबी दिवस 2019 के अवसर पर महानिदेशक अथवा मुख्य अतिथि द्वारा समारोह में पुरस्कृत किया जाएगा। उन सभी लोगों को भी सांत्वना / प्रोत्साहन पुरस्कार भी दिये जाने का प्रस्ताव है, जिन्होने कार्यक्रमों में अपनी प्रतिभागिता दी है। अपने समापन भाषण में महानिदेशक डा. महापात्र ने कर्मचारियों तथा प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कार्यालय में हिन्दी के प्रचार–प्रसार में अग्रणी भूमिका निभाने का आग्रह किया और इस बात पर बल दिया की हमें हिन्दी को प्रतिदिन की दिनचर्या में शामिल करके राष्ट्र के उत्थान में भागीदार बनना चाहिए। महानिदेशक ने एनसीबी में दिन प्रतिदिन बढ़ती हुई हिन्दी गतिविधियों और कार्यालयी हिन्दी

प्रयोग में हो रही बढ़ोतरी पर हिन्दी समिति के सदस्यों का आभार जताया। उन्होने कहा की हम शीघ्र ही संस्थान में राजभाषा की उन्नति के लक्ष्य को आसानी से प्राप्त कर लेंगे। उन्होने अपने वरिष्ठ सहयोगियों से भी हिन्दी में अधिकतम कार्य निष्पादन की अपील की। गैर हिन्दी क्षेत्रों की चर्चा करते हुए बताया कि मैं स्वयं गैर हिन्दी भाषी उड़ीसा प्रांत से ताल्लुक रखता हूँ, किन्तु एनसीबी में आने के बाद अब मुझे हिन्दी बोलने और बातचीत करने में कोई असुविधा नहीं होती और हमारा व्यक्तिगत संपर्क काफी बढ़ा है। जिससे हमारी उत्पादकता बढ़ेगी। महानिदेशक महोदय ने विश्वास दिलाया कि संस्थान में हिन्दी कि प्रगति को पूर्ण प्रोत्साहन दिया जाएगा और किसी भी प्रकार कि कमी इसमें बाधक नहीं होगी। अपने कर्मचारियों की प्रशंसा करते हुए उन्होने अपने भाषण में कहा कि हमें पूरे वर्ष हिन्दी के कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए ताकि नयी – नयी प्रतिभाएँ सामने आ सकें। अंत में श्री मोहम्मद इकबाल ने धन्यवाद प्रस्ताव देकर सभी के सहयोग का आभार प्रकट किया और कार्यक्रम के समाप्ति कि घोषणा की। कुल मिलाकर पखवाड़े का सारा आयोजन काफी सरल एवं उत्साहवर्धक रहा।

# हिंदी पत्राचार की स्थिति

## हिन्दी भाषा अधिनियम के तहत 'क', 'ख', 'ग' क्षेत्र में पत्राचार का वस्तुस्थिति

भारत सरकार ने कार्यालयों को क्षेत्रीय स्तर पर 'क', 'ख' और 'ग' में बाँटा है और उसके लिये सभी कार्यालय के पत्राचार हेतु लक्ष्य निर्धारित किये गये है। एन.सी.बी. ने पिछली तीन तिमाही के विभिन्न क्षेत्रो में निर्धारित लक्ष्य को बहुत ही उत्साहपूर्ण परिणाम प्राप्त किये है जिनका विवरण नीचे दिया जा रहा है

''क' क्षेत्र पत्राचार की स्थिति

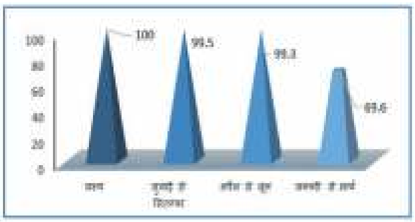


'ख' क्षेत्र पत्राचार की स्थिति

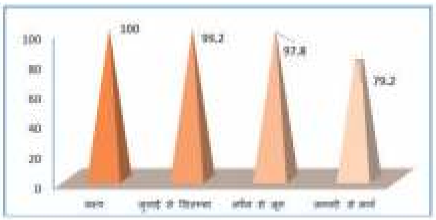


'ग' क्षेत्र पत्राचार की स्थिति

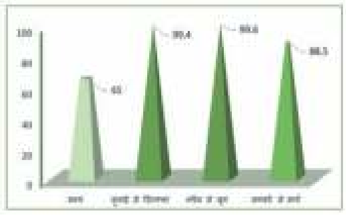

# प्रतियोगिताओं के विजेता

हिंदी पखवाड़े में आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेता

## स्वविचार प्रतियोगिता

श्री कपिल कुकरेजा – प्रथम

श्री अंकुर अवस्थी – द्वितीय

## शब्द–कोश प्रतियोगिता

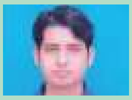
श्री इम्तियाज़ खान – प्रथम

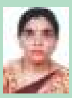
श्रीमती नीरज कौशिक – द्वितीय

## श्रुतलेखन व टिपण्णी लेखन प्रतियोगिता

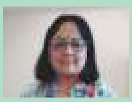
डॉ पिंकी पांडे – प्रथम

श्रीमती मेघना वर्मा – द्वितीय

## अनुवाद प्रतियोगिता

श्री अंकुर अवस्थी – प्रथम

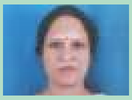
श्रीमती अनुप्रित राणा – द्वितीय

## निबंध लेखन प्रतियोगिता

श्रीमती मेघना वर्मा – प्रथम

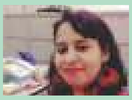
कुमारी चारू बजाज – द्वितीय

# राजभाषा नीति और कार्यान्वयन पर कार्यशाला

## राजभाषा नीति और कार्यान्वयन पर कार्यशाला

भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन तथा महानिदेशक के निर्देशन में, एन सी बी कार्यान्वयन समिति द्वारा गत वर्ष तीन कार्यशालाएं आयोजित की गई।

डॉ राजबीर सिंह, महाप्रबंधक (एनएचपीसी) राजभाषानीति और राजभाषा कार्यशाला पर जानकारी देते हुए (15 फरवरी, 2019)

श्री केवल कृष्ण, सेवानिवृत्त राजभाषा गृह मंत्रालय द्वारा हिन्दी में उपलब्ध कंप्यूटर साधित सॉफ्टवेर व नवीनतम जानकारी देते हुए (03 जुलाई 2019)

श्री नरेश कुमार पूर्व उपमहाप्रबंधक, रिज़र्व बैंक ऑफ़ इंडिया द्वारा दैनिक कार्यो में हिन्दी के उपयोग में आने वाली कठिनाइयों का समाधा, राजभाषा नीति का अनुपालन, टिप्पणी लेखन और इससे जुड़ी अन्य जानकारी देते हुए (04 जुलाई 2019)

# महानिदेशक साक्षात्कार – विश्वमुक्ति पत्रिका में प्रकाशित

राष्ट्रीय सीमेंट एवं भवन सामग्री परिषद (एनसीबी), बल्लबगढ़
सीमेंट और भवन निर्माण सामग्री अनुसंधान में एक अग्रणी राष्ट्रीय संस्था

फ़रीदाबाद हरियाणा में राष्ट्रीय राजमार्ग–2 पर बल्लबगढ़ में स्थित राष्ट्रीय सीमेंट एवं भवन सामग्री परिषद (एनसीबी), एक बहुआयामी केंद्र, जो अपनी स्थापना के वर्ष 1962 से ही लगातार सीमेंट व भवन सामग्री उद्योग को अपनी सेवाएँ उपलब्ध करा रहा है। भारत सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन यह वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान संगठन पूरी निष्ठा और लगन से सीमेंट तथा भवन निर्माण क्षेत्र को अपनी अनुसंधान, तकनीकी विकास और हस्तांतरण, सतत् शिक्षा, परीक्षण, मानकीकरण व गुणवत्ता नियंत्रण जैसी सेवाएँ उपलब्ध करा रहा है।

राष्ट्रीय स्तर के इस संगठन की गतिविधियां वर्तमान में मुख्य तौर पर बल्लबगढ़, हैदराबाद, अहमदाबाद इकाइयों द्वारा संचालित होती हैं। जिसका केंद्र बिन्दु बल्लबगढ़ (मुख्य प्रयोगशाला) के रूप में स्थित है। ग्राहकोंमुखी इस संस्थान ने पूर्वी ग्राहकों को उत्तम सेवा प्रदान करने के उद्देश्य से अभी हाल ही में भुवनेश्वर (उड़ीसा) में एक प्रयोगशाला केंद्र स्थापित किया है। एनसीबी की इकाइयां अपनी गुणवत्ता और सेवा धर्म का पालन करते हुए उद्योगों से प्राप्त प्रायोजित परियोजनाओं व भारत सरकार की कार्यक्रमबद्ध परियोजनाओं पर कार्य करने के साथ–साथ अन्य उद्योगपरक सेवाएँ भी प्रदान करती हैं। संस्थान के महानिर्देशक डॉ बीबेकानंद महापात्र भारत व विदेशों में ख्याति प्राप्त एक ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्होने भारतीय सीमेंट उद्योग में अग्रणी भूमिका निभाई है। डॉ महापात्र उड़ीसा प्रांत से संबंध रखने वाले गैर हिंदी–भाषी वैज्ञानिक हैं जो 32 वर्षों से अधिक समय भारतीय सीमेंट निर्माण उद्योग को अनुसंधान के साथ सामग्री लक्षण, कच्चे मिश्रण अभिकल्प अनुकूलन, नवीन उत्पाद विकास, प्रक्रिया रणनीति योजना, वैकल्पिक ईंधन व कच्ची सामग्री उपयोग, गुणवत्ता नियंत्रण, गुणवत्ता आश्वासन, गुणवत्ता अनुकूलता और विभिन्न प्रकार के नवीन सीमेंट विकास जैसे कंपोसिट सीमेंट, हाई स्लैग व फ़्लाइऐश सीमेंट, ऑयलवेल सीमेंट जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अपनी सेवाएँ प्रदान कर चुके हैं। एनसीबी में महानिदेशक के पद पर कार्यभार ग्रहण करने से पूर्व डॉ महापात्र देश की मानी–जानी कई बड़ी सीमेंट निर्माता कंपनियों के साथ जुड़े रहे। इसके अतिरिक्त डॉ महापात्र कई देशी व विदेशी संगठनों के साथ प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से भी लगातार जुड़े रहें हैं। कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सेमीनारों के साथ विभिन्न पत्रिकाओं में आपके लिखे करीब 68 प्रपत्र प्रकाशित हो चुके हैं एवं कई प्रपत्रों को गुणवत्ता के हिसाब से उत्कृष्ठ घोषित किया जा चुका है।

डॉ महापात्र गैर हिन्दी भाषी होते हुए भी हिन्दी भाषा के प्रति बहुत ज्यादा स्नेह और सम्मान रखते हैं। हिन्दी के विकास, प्रचार और प्रसार से संबन्धित सभी कार्यक्रमों में स्वयं अपनी भागीदारी प्रस्तुत करते हैं और अपने अधीन कार्यरत कर्मचारियों व अधिकारियों को हिन्दी में अधिकतम काम करने के लिए उत्साहित करते हैं।

अभी कुछ समय पूर्व हिन्दी के विकास को लेकर 'विश्वमुक्ति' ने राष्ट्रीय सीमेंट एवं भवन सामग्री परिषद (एनसीबी) के महानिर्देशक डॉ बीबेकानंद महापात्र जी से हिन्दी विषय पर बातचीत की। वार्ता के कुछ अंश यहां पर प्रस्तुत है।

विश्वमुक्ति : राष्ट्रीय स्तर की सरकारी संस्था के आप महानिदेशक हैं। सीमेंट से जुड़ी विभिन्न संस्थाओं में हिन्दी का बोलचाल में खूब प्रयोग है। इससे कार्य पर क्या प्रभाव पड़ता है? आपके विचार से अंग्रेजी का स्थान हिन्दी ने लेकर क्या स्थिति बनाई?

**डॉ महापात्र :** देखिये, आप तो जानते हैं कि मैं गैर हिन्दी–भाषी क्षेत्र से आता हूं। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि मैं हिन्दी से प्यार न करूँ। हिन्दी हमारी राजभाषा है और यह मेरे लिए गौरव की बात है कि मै एनसीबी जैसे महान संगठन के साथ जुड़ा हूं। मेरा जन्म से ही हिन्दी के साथ लगाव रहा है और मैं जहां भी रहा हूं हिन्दी मेरे साथ सदैव रही है। इस संगठन से व्यक्तिगतरूप से जुड़ने के बाद मैंने देखा कि एनसीबी में हिन्दी को लेकर हमारे कर्मचारी और अधिकारी बहुत उत्साह रखते हैं और वे जागरूक हैं। यह बात अलग है कि सीमेंट उद्योग में अनुसंधान संबंधी कार्य में अंग्रेजी का सहयोग लिया जाता है क्योंकि सीमेंट, अंतर्राष्ट्रीय स्तर का उद्योग है। लेकिन हम सभी लोग प्लांटों में आपसी बातचीत तो ज़्यादातर हिन्दी में ही करते हैं और मै दावे के साथ कहता हूं कि हिन्दी समझने और समझाने एक सरल और सशक्त माध्यम है। मुझे नहीं लगता कि हिन्दी हमारे कार्य में या अनुसंधान में कहीं बाधक साबित हो सकती है। लोगों ने बहुत खुशी से अब हिन्दी को स्वीकार किया है और वे बेहिचक बोलचाल में हिन्दी अपना रहें हैं। मुझे ऐसा लगता है कि आने वाले दिनों में अनुसंधान प्रपत्र भी हिन्दी में लिखकर प्रदर्शित किए जाएंगे। इसमें कोई संदेह नहीं है।

**विश्वमुक्ति :** इस संस्थान में विभिन्न क्षेत्रों के लोग काम करते हैं। हिन्दी बोलचाल से उन्हे क्या लाभ हानि होती है।

**डॉ महापात्र :** देखिये, मैंने कहा कि हिन्दी हमारी राजभाषा है और बहुत लोगों की यह मातृभाषा भी है। जिनकी यह मातृभाषा है वे तो हिन्दी में ही बात और संवाद करना पसंद करते हैं लेकिन वे लोग जो गैर हिन्दी–भाषी क्षेत्र से हैं और जिनकी मातृभाषा भी कोई क्षेत्रीय भाषा है, उन्हें संवाद में थोड़ी असुविधा अवश्य होती है। गैर हिन्दी–भाषी कर्मचारियों और अधिकारियों के लिए हमारे यहां बैठकों के आयोजन में हिन्दी धारा प्रवाह संवाद और बातचीत पर ज़ोर दिया जाता है। ताकि अधिकतम लोग संवाद की विषय सामग्री को आसानी से समझ सकें और भाषा, काम के निष्पादन में कोई रुकावट न पैदा करे। हमारे संस्थान में हिन्दी भाषा को लेकर कोई भेद भाव नहीं है। हमारे यहां हिन्दी के प्रति रुचि बढ़ाने के लिए एक 'एनसीबी राजभाषा कार्यान्वयन समिति' गठित की गई है। जिसमें नियमित रूप से समिति के सदस्यगण बैठक आयोजित करते हैं और हिन्दी की प्रगति पर आवश्यक विचार–विमर्श करके परिणामों को संस्थान में लागू किया जाता है। इन बैठकों में कई बार मैं स्वयं उपस्थित होकर बैठक की समीक्षा करता हूं और सदस्यों के सुझावों को सज्ञान में लेता हूं।

**विश्वमुक्ति :** लेखन में वर्तमान क्या स्थिति है?

**डॉ महापात्र :** अभी अनुसंधान संबंधी कार्य और परियोजना रिपोर्ट अंग्रेजी के सहयोग से पूरी हो रहीं हैं। इसका कारण यह है कि तकनीकी शब्दों और प्रक्रिया प्रणाली की जटिलता इसमें बाधक बनी हुई है। यदि इसमें अनुवाद प्रणाली का समावेश किया गया तो विषय वस्तु को समझने का भ्रम हो सकता है और उससे परीक्षण में त्रुटि की संभावना पैदा होने से परिणाम असंगत हो सकते हैं। लेकिन मुझे उम्मीद है कि भविष्य में इस कमी को दूर कर लिया जाएगा।

**विश्वमुक्ति :** सरकार ने हिन्दी में 100 प्रति 100 पत्राचार की नीति राखी है। आपके यहां उसकी क्या स्थिति है?

**डॉ महापात्र :** देखिये, भारत सरकार की नीति के अनुसार हमारा संगठन नीतियानुरूप चल रहा है। हम 'क', 'ख' और 'ग' क्षेत्रों में पत्राचार की स्थिति में लगातार वृद्धि की ओर अग्रसर हैं। सितंबर 2019 की छमाही रिपोर्ट के आधार पर हमने 'ग' क्षेत्र में 65 प्रतिशत के लक्ष्य को पार कर लिया है जबकि 'क' और 'ख' क्षेत्र में निर्धारित लक्ष्य 100 प्रतिशत प्रत्येक की तुलना में यह लक्ष्य क्रमशः 0.61 प्रतिशत व 1.66 प्रतिशत ही दूर रह गया है।

**विश्वमुक्ति :** हिन्दी प्रशिक्षण हेतु क्या व्यवस्था है? कोई योजना इस पर है?

**डॉ महापात्र :** देखिये, एक तकनीकी व वैज्ञानिक अनुसंधान केंद्र होने के कारण हिन्दी प्रशिक्षण की फिलहाल कोई आंतरिक व्यवस्था नहीं है। परन्तु, बीच–बीच में 'एनसीबी राजभाषा कार्यान्वयन समिति' द्वारा प्रशिक्षण की कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं। इसके अलावा 'नगर राजभाषा कार्यालय (नराकास) फ़रीदाबाद द्वारा आयोजित कार्यशालाओं में उनके निवेदन पर कर्मचारियों को प्रशिक्षण के लिए भेजा जाता है। इस वर्ष एनसीबी में दो कार्यशालाएं आयोजित की गई जबकि दो कार्मिकों को नराकास द्वारा आयोजित बाहरी प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए भेजा गया। भविष्य में आवश्यकता को देखते हुए नियमित हिन्दी प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाएगी।

**विश्वमुक्ति :** 'हिन्दी लादी जा रही है' – इस कथन पर आपको अनुभूति क्या है?

**डॉ महापात्र :** ऐसा नहीं है। मैं नहीं मानता। हिन्दी राजभाषा है और इसका सम्मान होना चाहिए। विश्व में बहुत सारे ऐसे देश हैं जिन्होने दूसरी भाषाओं को पूरी तरह से त्याग दिया है। हमें भी अपनी राजभाषा के साथ संयुक्त होकर इसे राष्ट्र भाषा में परिवर्तित करने के लिए एकजुट होकर काम करना चाहिए। एक राष्ट्र भाषा ही एक विकसित राष्ट्र का निर्माण कर सकती है।

**विश्वमुक्ति :** त्रिभाषी सूत्र पर आपका क्या विचार हैं?

**डॉ महापात्र :** देखिये, हमारा देश कई भाषाओं व उनकी संस्कृति को संयोजित किए हुए है। अलग–अलग प्रान्तों की अलग–अलग भाषायेँ है। मेरे विचार से यह मान्यता इस बात पर आधारित हो सकती है कि उस क्षेत्र के लोग यदि हिन्दी के प्रति व्यावहारिक नहीं हैं तो उन्हे हिन्दी के मार्ग पर लाने के लिए क्षेत्रीय भाषाओं का सहयोग दिया जाए। जिससे न तो क्षेत्रीय भाषायें लुप्त हो सकेंगी और न ही हिन्दी की प्रगति में कोई बाधा होगी। 'त्रिभाषी सूत्र हिन्दी प्रगति के लिए वरदान है।

**विश्वमुक्ति :** आप हिन्दी समारोहों, कार्यशाला आदि को किस रूप में देखते हैं।

**डॉ महापात्र :** हिन्दी समारोहों, कार्यशाला आदि का आयोजन निश्चय ही हिन्दी की प्रगति के लिए आवश्यक औज़ार है। इससे जहां एक तरफ हिन्दी को नई दिशा मिलती है, वहीं दूसरी ओर हिन्दी प्रेमियों को उत्साह और गैर हिन्दी भाषी लोगों को सीखने का अवसर मिलता है।

**विश्वमुक्ति :** राजभाषा के संबंध में आपका संदेश?

**डॉ महापात्र :** मैं कहना चाहूँगा कि हिन्दी की प्रगति राष्ट्रीय विकास के लिए अति आवश्यक है। जहां तक संभव हो सके, हमें राजभाषा को अपना विचार बनाना चाहिए और इसे शीर्ष पटल पर स्थापित करने का हर संभव प्रयास करना चाहिए। एक राष्ट्र एक भाषा का सूत्र भारत को विश्व में अग्रणी स्थान पर स्थापित करने में सहायक होगा।

– – – – – –

# कविताएँ

लक्ष्मण सिंह बिष्ट (पहाड़ी)
एच आर एस (जैन)

## अंधेरी दुनिया

अंधेरी दुनिया एक सुरंग है
जाने कब कहाँ और कैसे
उठा लिए जाएंगे ये मासूम
अबोध शिशु
जिन हालातों में जिएंगे
माँ ! तुम्हें ढूंढेंगे
किसी मज़दूर पिता को पसीना बहाते देख धूप में
अपने आँसू
भीतर ही भीतर पिएंगे
किन्तु कोई स्कूल जाता भाई
कहाँ जान सकेगा इनकी वेदना को
आरती की थाल हाथों में लिए बहन
पहना ना सकेगी बंधन का धागा
माँ ! तुम जानकर भी मुझे पहचान ना पाओगी
और मैं अनजान
जाने किस – किस की सूरत में
तुम्हें ढूंढता फिरूँगा
दर्द और शोषण की मार
अंधकारमय भविष्य को
अंधेरी सुरंग में
दूर तक ले जाएगी
माँ ! तुम मुझे भूलने का जतन करना
मैं तुम्हें पाने की आस में जी लूँगा ᐡ

## सृजन के बीज

वृक्षों के घने साये
और इनसे भी छनकर आती यह उजास
अद्भुत है यह शक्ति
इस भव्य शून्य के पार
एक डोर है चेतना की
यूं ही नहीं हुमकता कोई
मेरे भीतरी तहखानों में
ना भूला है कभी आत्मसात करना
इन चकित विस्मृत रचनाओं को देख
योनियाँ कितनी धारण करता आया है काल
उफनती ज्वालामुखियों के मुख
भस्म बनाते लावे तक में
फूटने लगते हैं अंकुर
क्या आंधियों के अंधड़ ज्वार
रोपना जानते हैं जीवन नहीं!
जल थल से परे बँटता है वहाँ
काल की चोटी पर बैठा महाकाल
इस चक्र का स्वामी
संभाले है बीज सृजन के
यूं ही फलती फूलती रहेगी सृष्टि
घोर तांडवों के बाद .....

डॉ पिंकी पांडे
सी आर टी

एम० एम० जमाली
सी आर टी (टेस्ट हाउस)

## होली के रंग– जोगीड़ा के संग

आलू पराठा नाश्ता करके ऑफिस आए शंकर।
बॉस के पेट मे चूहा दौड़े बीबी जाती दफ्तर।
जोगीरा सा रा रा रा।
''''

गलती करता जाये भैया देख रहा ना कोई।
एक एक पाई का हिसाब भी समय पड़े पर होई।
जोगीरा सा रा रा रा।
''''

मिलन की होली है, मिलन के हैं रंग।
फिर क्यों आपस में हो जाती जंग।
जोगीरा सा रा रा रा।
''''

आता है जब भारत की सेना को तैश।
पानी मांगे हिजबुल और हवा मे उड़े जैश।
जोगीरा सा रा रा रा।
''''

कौन सोहे मंदिर में कौन सोहे बाज़ार।
कौन सोहे सीमा पर कौन ससुरार।
जोगीरा सा रा रा रा।
''''

प्रभु सोहें मंदिर में सेठ जी बाज़ार।
जवान सोहे सीमा पर कायर ससुरार।
जोगीरा सा रा रा रा।
''''

देश पर जब मंडराये नापाकिस्तानी बाज़।
भीतर जाकर ठोक के आया अभिनंदन जांबाज।
जोगीरा सा रा रा रा।
''''

## चन्द पसंदीदा अशआर(शायरी)

उक़ाबी रुह जब बेदार होती है जवानों में।
नज़र आती है उनको अपनी मंज़िल आसमानों में।।
अनजान तुम बने रहे ये और बात है।
ऐसा तो क्या है तुमको हमारी खबर न हो।।
तदबीर के हाथों में तक़दीर दरखशां होती हैं।
कुदरत भी मदद फर्माता है जब कोशिशे इंसां होती है।।
उनमें और मुझमें यही शर्तें वफा ठहरी हैं।
वे सितम ढाएं मगर उनको सितमगर न कहूं।।
बाग़बां ने जब आग दी आशियाने को।
जिन पे तकिया था वही पत्ते हवा देने लगे।।
तुम्हारी याद के जब ज़ख्म भरने लगते हैं।
किसी बहाने तुम्हें याद करने लगते हैं।।
फलक पर जब चमकता है हमारे अज़्म का सूरज।
तो खुद तारीकियां गहराइयों में डूब जाती हैं।।
चमक ऐसे नहीं आती है खुद्दारी के चेहरे पर।
अना को हमने दो दो वक्त का फाका कराया है।।
भूख में कोई कैसे बाताये कैसा लगता है।
सूखी रोटी का टुकड़ा भी तोहफ़ा लगता है।।
घर से निकलो तो पता जेब में रखकर निकलो।
हादसा चेहरे की पहचान मिटा देती है।।
बेकार समझकर मुझे ना ठुकराओ यारों।
ये ज़िन्दगी कल सुबह की अख़बार नहीं है।।
वो कितना खुदगर्ज़ था कि जो मेरे नाम से।
मशहूर खुद हुआ मुझे रुसवाई दे गया।।
जब भी आता है तेरा नाम मेरे नाम के साथ।
जाने क्यूं लोग मेरे नाम से जल जाते हैं।।
सो जाते हैं फुटपाथ पर अख़बार बिछा कर।
मज़दूर कभी नींद की गोली नहीं खाते।।
आप ने तीर लगाई तो कोई बात न थी।
ज़ख्म मैंने दिखाया तो बुरा मान गए।।

रश्मि गुप्ता
सीआरटी टेस्ट हाउस

## हिंदी – अनमोल

मीरा केशव जायसी तुलसी सूर कबीर
किसी किस भाषा की है भला हिंदी सी तकदीर
शब्द शब्द संवेदना अक्षर अक्षर प्यार
हर सुख से संपन्न है हिंदी का संसार
अंकित जिनकी रोटियां पर हिंदी का नाम
हिंदी उनके वास्ते शब्द एक बे दाम
हिंदी तो छोड़ी मगर बन ना सके अंग्रेज
एक मुखौटा उम्र भर रखते रहे सहेज
कथनी के कुछ अर्थ हैं करने के कुछ अर्थ
सौ सौ हिंदी दिवस भी ऐसे में है व्यर्थ
अरे परिंदे छोड़कर निज बोली अनमोल
कब तक बोलेगा भला तू उधार के बोल

प्रमोद कौशिक
सी आर टी (ए०एल०एस)

## आने वाला कल

आने वाला कल कहता है संभल संभल के चल
इतना संभल की सुधर जाए कल
समर समर सुधर जाए कल ताकि पछताना न पड़े कल
आने वाला कल कहता है संभल संभल के चल
जो गुजर गया वह गुजर गया
हाथ कभी ना आएगा
आने वाला कल कुछ ना कुछ नया सिखाएगा
आने वाला कल को किसने देखा
नहीं देखा मगर सोचा जरूर
सोचा पर मिला नहीं तो देखा नहीं
सोचा और मिल गया तो देखा खुशी का पल
आने वाला कल कहता है संभल–संभल के चल

ज्योत्स्ना पांचाल
सी क्यू सी

## हमारे बुजुर्ग

बचपन में उँगली पकड़कर चलना सिखाते हैं,
हाथ जोड़कर आदर करना भी बताते हैं,
वो हमें द्रढ़, स्वावलंबी और अच्छा इंसान बनाते हैं।
हमारे बुजुर्ग हमें सब सिखाते हैं।

जब किसी कारणवश, हम भाई बहन आपस में लड़ने लग जाते हैं,
एक दूसरे से रूठकर, जब हम नज़रें भी चुराते हैं,
तब हमारे बड़े हमें, साथ में मिलकर रहना बतलाते हैं,
हमारे बुजुर्ग हमें सब सिखाते हैं।

जब दुष्ट लोग, हमें हमारे पथ से भटकाते हैं,
उस नादानी में जब हम, कोई गलत काम कर जाते हैं,
तब वो हमें, सर झुकाकर माफ़ी मांगना बताते हैं,
हमारे बुजुर्ग हमें सब सिखाते हैं।

ज़िंदगी के बोझ से, यह कंधे जब थक से जाते हैं,
जीवन के अँधियारे में, हम जब कभी फंस जाते हैं,
वो रोशनी की किरण दिखाकर, हमें नयी राह पर चलाते हैं,
हमारे बुजुर्ग हमें सब सिखाते हैं।

इस दौड़ती भागती ज़िंदगी में, जब हम अकेले रह जाते हैं,
खूब बुलाने पर भी जब हम, उनको अपने पास नहीं पाते हैं,
तब भी उनके वो कड़वे बोल, हमें डट कर खड़े रहना ही सिखाते हैं,
हमारे बुजुर्ग हमें सब सिखाते हैं।

जिनकी ममता के आँचल में, हम हमेशा रहना चाहते हैं,
वो हमें ज़िंदगी के रंग बिरंगे आसमान में,
बिना पंख के भी उड़ना बताते हैं,
हमारे बुजुर्ग हमें सब सिखाते हैं।
हमारे बुजुर्ग हमें सब सिखाते हैं।

अंकुर अवस्थी
सीआरटी

## हैरान हूँ इंसान की फितरत बदलती देख

हैरान हूँ इंसान की फितरत बदलती देख
इंसानों में घटती हमदर्दी देख,
एक पल नहीं सोचता किसी का नुकसान कर अपना फायदा करने में
किसी के दर्द को अनदेखा करने में
हैरान हूँ किसी की तकलीफ में किसी को हँसता देख
हैरान हूँ इंसान की फितरत बदलती देख

हैरान हूँ इंसान का लालच बढ़ते देख
सिर्फ मुनाफा चाहिये, नोटों की गड्डी में इज़ाफा चाहिये
कितना भी कमा लें पर फिर भी चैन नही
बहुत कुछ हासिल है पर फिर भी जो हासिल नही
उसकी कमी से दुखी होते देख
सब सुख हैं पास में
पर अपनी गाड़ी पड़ोसी से छोटी है
ये परेशानी भी तो बहुत मोटी है
किसी की दौलत से अपनी दौलत कम जानके
किसी को दुखी होते देख
बड़े बड़े मकानों से
भिखारी को खाली हाथ निकलता देख
हैरान हूँ इंसान की फितरत बदलती देख

हैरान हूँ आजकल के चलन को देख
पहले अच्छे स्वभाव, अच्छी नीयत
सच्चाई से किसी की पहचान की जाती थी
इंसान के ज्ञान और योग्यता से उसकी पहचान की जाती थी
आज सिर्फ कपड़ो और गाडियों से पहचान होते देख
कभी चापलूसी से, कभी पहुँच से
तो कभी अपना ईमान बेच किसी को
बेशर्मी से आगे बढ़ता देख
हैरान हूँ इंसान की फितरत बदलती देख

किसी की कामयाबी उसके परिवार के बुर्जुगों
और बच्चों से पता चलती थी
कि जिन्होंने उसकी परवरिश की, वो कैसे हैं
जिनकी परवरिश उसने की, वो कैसे हैं
पर आजकल गाड़ी बंगला हो
चाहे बच्चा कहीं नशा किए पड़ा हो
क्योंकि पैसों की भाग दौड़ में
बच्चे को समय न देता देख
और बूढ़े माँ बापको वृद्धाश्रमों में देख
हैरान हूँ इंसान की फितरत बदलती देख

विकास करते करते कब इंसान से जानवर
और किसी को जानवर से हैवान होते देख
बच्चियाँ सुरक्षित नहीं, महिलायें कहाँ से होंगी
आदमी की नीचता को इतना नीचे गिरता देख
हैरान हूँ इंसान की फितरत बदलती देख।

सरकार और आतंकवाद की लड़ाई में
निर्दोष लोगों को पिसता देख
बड़े–बड़े देशों को बड़ी बड़ी मिसाइल
छोटे छोटे बच्चों पे गिरते देख
सरहदों पर सैनिकों को मरते देख
इंसान की हाथों, इंसानियत का कत्ल होते देख
हैरान हूँ इंसान की फितरत बदलती देख
हैरान हूँ इंसान की फितरत बदलती देख

अभिषेक अग्निहोत्री
सी क्यू सी

## एहसास

आज गाँव लौटते हुए अपने आप से मुलाक़ात हो गयी
खेत की मेड पर बैठे–बैठे कब दिन से रात हो गयी
यादों का सिलसिला कुछ यूं चला की बचपन से मुलाक़ात हो गयी
गाँव की गलियां कुछ अपनी सी लगने लगी
शहर की बड़ी सी जिंदगी बेमानी सी हो गयी
आज की मुलाक़ात एक छोटी सी मुस्कान दे गयी
भूले बिसरे अफसाने ही सही पर अपने होने का एहसास करा गयी
आज की मुलाक़ात हँसते–हँसते रुला गयी
चलो अच्छा ही हुआ कि अपने आप से मिला गयी

कपिल कुकरेजा
सी एम ई

# पुराने साल और नए साल की वार्तालाप

पुराना साल जाने की, दहलीज पर आकर बैठा है
नया साल नई उम्मीदों, के पंख फैला कर बैठा है
पुराना साल बताता है कि, हमारे गीत कहां लड़खड़ाए
नया साल होठों पर नए, गीत सजा कर बैठा है

पुराना साल संग्रह था, कुछ खट्टी मीठी यादों का
कुछ पूरे हुए इरादों, का कुछ अधूरे छुटे वादों का
पुराना साल संग्रह था, कुछ महत्वपूर्ण संवादों का
कुछ अलिखित कविताओं के, हिंदी अनुवादों का
पुराना साल कुछ यादों को, अंदर समा कर बैठा है
नया साल नई उम्मीदों, के पंख फैला कर बैठा है

पुराने साल ने शीत ऋतु, नए साल को उपहार दिया
छिपता छुपाता सूरज दिया, कोहरे में छिपाकर प्यार दिया
नए साल में इस बार को, सहजता से स्वीकार किया
जाते–जाते पुराने साल को, आलिंगन सौ सौ बार किया
मिलने बिछड़ने का यह पल, कई एहसास दबा कर बैठा है
नया साल नई उम्मीदों, के पंख फैलाकर बैठा है

जाते–जाते पुराना साल, नए साल को समझाता है
अपने साल भर के तजुर्बे, को कुछ यूँ बतलाता है
कि संभलकर आना नया साल जब भारत में आता है
वैसे तो भारत अपनी, संस्कृति के लिए जाना जाता है
जब बात खुद की बेटियों की हो, तो मुक बधिर बन जाता है
नदियों के पावन जल में, खुद ही जहर मिलाता है
फिर उन्हीं नदियों को साफ करने का, यह अभियान चलाता है
पहले शुद्ध हवा को, खुद ही जहरीला करता है
इससे बचने को, जाकर घरों में छुप जाता है
संभलकर आना नया साल जब भारत में आता है

यहां पर आम आदमी अपनी, जात बता दे बताने में घबराता है
यहां इंसानियत पर हमेशा, मजहब भारी पड़ जाता है
यहां रात को सीता अब भी, घर से निकलने में डरती है
यहां रावण की लंका अब भी जगह जगह पर बस्ती है
यहां अब भी कई लोग, भूखे पेट ही सोते हैं
फुटपाथ पर गरीब बच्चे, मारे ठंड के रोते हैं

यहां पर अब भी कर्जा, किसानों को जान से भारी पड़ जाता है
संभलकर आना नया साल जब भारत में आता है

बात सुनकर पुराने साल की नया साल डरने लगा
भारत में आया लौट जाये, ये विचार करने लगा
नए साल की हालात को पुराने साल ने भांप लिया
नया साल भारत क्यों आए, इस बात का अब तर्क दिया

नया साल भारत के लिए एक नया विश्वास है
विवेकानंद कलाम की धरती का, कुछ ऐसा इतिहास है
इसी धरती ने गांधी दिया, इसी ने पटेल दिया है
इसी धरती ने, विश्व को हॉकी का खेल दिया है

इस धरती पर आए जितने, सब को उसने प्यार दिया है
इसी धरती पर आर्यभट्ट, ने सुनने का आविष्कार किया है
इसी धरती ने विश्व को, तारों का ज्ञान दिया है
इसी धरती ने दुनिया को, आयुर्वेद जैसा विज्ञान दिया है

इसी धरती पर जन्म लिया, भगत सिंह – आजाद जैसे वीरों ने
और इसी धरती पर जन्म लिया, साईं जैसे फकीरों ने
इसी धरती ने राम जैसे, पुरुषोत्तम को देखा है
इसी धरती पर कृष्ण की, लीलाओं का लेखा–जोखा है

अब भी सारा विश्व भारत को, आस लगाकर देखता है
चाइना तो आधा सामान, इसी धरती पर बेचता है

इन बातों को सुनकर नए साल को ज्ञान हुआ
ऐसे ही भारत का ना, पूरी दुनिया में व्याख्यान हुआ
अब नए साल को, भारत में आने में गर्व है
अब वह जान चुका है कि, नया वर्ष भारत में एक पर्व है

........................

## सड़क सुरक्षा

सड़क सुरक्षा एक महत्वपूर्ण चिंतित विषय है और यह एक सार्वजनिक स्वास्थ्य और आठवां मृत्यु व आकस्मिक चोट का बदलता हुआ कारक है विश्व स्वास्थ्य संगठन डब्ल्यू एच ओ के अनुसार 1.3 मिलीयन लोगों ने अपनी जान सड़क दुर्घटना के अंतर्गत गवाई है मध्य आयवर्ग वाले देशों में 90 प्रतिशत के करीब सड़क दुर्घटनाएं होती हैं यह अत्यंत दुर्भाग्य का विषय है अकेले भारत में 11 प्रतिशत सड़क दुर्घटनाएं हुई हैं सड़क दुर्घटना के कारण 3 प्रतिशत सकल घरेलू उत्पाद की क्षति हो रही है वर्ष 2017 की तुलना में 2018 में सड़क दुर्घटना के फलस्वरुप मृत्यु की संख्या 147913 से बढ़कर 151417 हो चुकी है

"सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय" के वर्ष 2018 के सड़क दुर्घटना प्रतिवेदन के अनुसार 83 प्रतिशत लोगों ने सड़क पर वाहन चलाने का परिणाम भुगता है यदि किसी परिवार का पालन करता सड़क दुर्घटना के अंतर्गत मृत्यु को प्राप्त हो जाता है तो उसका परिणाम परिवार को जीवन पर्यंत भुगतना पड़ता है सड़क दुर्घटना के बहुत से कारण हैं जिसमें से कुछ प्रमुख कारण इस प्रकार हैं

1. शराब का सेवन करके वाहन चलाना
2. सीट बेल्ट व हेलमेट को प्रयोग में ना लाना
3. तेज गति से वाहन चलाना
4. वाहन चलाते वक्त मोबाइल का प्रयोग करना
5. बिना किसी संकेत के वाहन को मोड़ना
6. गलत दिशा में वाहन निकालना
7. गलत लेन में वाहन चलाना
8. विभिन्न प्रकार के दिशा निर्देशों का ज्ञान ना होना या फिर उनका पालन ना करना

भारत में सर्वाधिक असुरक्षित लोग पैदल यात्री साइकिल चालक वाहक दो पहिया वाहक जो कि 35.2 प्रतिशत है हालांकि भारत सरकार पिछले एक दशक से इस दिशा में निरंतर प्रयास कर रही है जिसमें की 3 ई अभियांत्रिकी प्रवर्तन शिक्षा पर निरंतर कार्य हो रहा है, जिसमें भारत ब्राजीलियन हस्ताक्षरकर्ता है जो कि 2015 में संगठित हुआ था जिसका लक्ष्य 2020 तक सड़क दुर्घटनाओं को कम करना था परंतु निरंतर प्रयास के बावजूद सड़क दुर्घटनाएं घटने की बजाय बढ़ रही हैं परंतु भारत सरकार द्वारा एक बहुत निर्णायक फैसला "मोटरयान संशोधन कानून" लागू करके लिया गया है जिसमें फाइन बहुत अधिक लगाया गया है इसी प्रकार सरकार के साथ हम सब (समुदाय, समाज, संचारक माता–पिता, अध्यापक एवं राजनेता) को संचार के माध्यम से सड़क दुर्घटना पर कार्य करना होगा

सड़क सुरक्षा दो तत्वों से मिलकर बना है दुर्घटना पूर्व और दुर्घटना पूर्वात, जिसमें दुर्घटना पश्चात पीड़ित को किस प्रकार बचाना और संभालना है यह भी एक महत्वपूर्ण विषय है

अंततः हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि सर्वाधिक दुर्घटनाएं सड़क यातायात के नियमों का पालन न करने के कारण होती हैं हम अपने स्तर पर ध्यान रखकर सड़क दुर्घटना को कम कर सकते हैं क्योंकि एम ओ आर एच के अनुसार भारत में 78 प्रतिशत मृत्यु चालकों के गलती एवं सड़क यातायात के नियमों के पालन न करने के कारण होती है अतः हम सभी हितकारक एकजुट होकर इस समस्या का समाधान कर सकते हैं

*पल्लवी त्रिपाठी*
*सीडीआर (कंक्रीट प्रयोगशाला)*

# जीवन यात्रा

एक नवयुवती बस में बैठी थी, अगले स्टॉप पर एक दबंग और क्रोधी बूढ़ी माँ आई, और उसके बगल की सीट पर बैठ गईं उन्होंने अपने कई बैग युवती से सटाकर रख दिए. बूढ़ी महिला के दूसरी ओर बैठी महिला परेशान हो गई. उसने युवती से कहा कि वह बूढ़ी महिला से कुछ बोलती क्यों नहीं ? युवती ने मुस्कराते हुए जवाब दिया॰ हर बात पर असभ्य व्यवहार या बहस करना आवश्यक नहीं, मैं अगले स्टॉप पर उतरने वाली हूँ. यह प्रतिक्रिया महत्वपूर्ण है,

आखिर हमारे साथ की यात्रा है ही कितनी लम्बी ? अगर हमें यह एहसास हो जाए, कि यहाँ हमारा समय कितना कम है, तो व्यर्थ के झगड़े, निरर्थक तर्क बात–बात पर असहमति और दूसरों में गलती खोजने वाला रवैया समय और ऊर्जा की बर्बादी का कारण नहीं, तो और क्या है ?

अगर किसी ने आपका दिल तोड़ा॰ शाँत रहो ! आखिर जीवन यात्रा इतनी छोटी जो है.
किसी ने आपके साथ विश्वासघात किया, धमकाया, धोखा दिया या अपमानित किया..शाँत रहें, क्षमा करें !
आखिर हमारी जीवन यात्रा इतनी कम जो है. जब भी कोई मुसीबत हमारे सामने आये, हमें याद रखना चाहिए, कि हमारे साथ की यात्रा बहुत छोटी ही है. इस यात्रा की अवधि .. कोई नहीं जानता कि उनका पड़ाव कब आएगा ? हमारी यात्रा एक साथ इतनी कम है, कि मालूम नहीं अगले पल क्या होने वाला है ? तो क्यों नहीं, हम अपने दोस्तों व परिवारजनों का ध्यान रखें, और अपने काम को संजोएं. आईए, अब हम एक–दूसरे के लिए सम्मानजनक, दयालु और क्षमाशील हों, और यह अहसास हमें कृतज्ञता और उल्लास से भर दे. अगर मेरे व्यवहार ने आपको कभी कोई चोट पहुँचाई है, तो मैं आपसे क्षमा माँगता हूँ. यदि आपने मुझे कभी दुख पहुँचाया है, तो मैंने आपको पहले ही क्षमा कर दिया है आखिर..हमारी जीवन यात्रा एक साथ है ही कितनी ?
बीते सुखद समय के लिए हम ईश्वर का आभार मानें, और इस जीवन यात्रा को सुखमय बनाएं।

*जितेन्द्र प्रसाद*
*सी आर टी (टेस्ट हाउस)*

# किस्सागोई

पूर्वी उत्तरप्रदेश का एक गाँव। लगन (शादी–ब्याह) का मौसम है। लाउडस्पीकर में जोर जोर से संझा पराती, झूमर, सहाना के वैवाहिक गीत बज रहे हैं। अरे जानते हो, देवी बाबा के घरे बियाह है। बाबा के बड़का बबुआ जो मर्चेन्ट नेवी में हैं, अरे बड़का कोठी है यार बंबई में, दू तीन ठे गाड़ी है, उनके बेटवा का बियाह है। तो कहो ना की देवी बाबा के पोता का सादी है। गाँव के दो अधेड़ तिमुहाने पर खड़े गलचऊर (गॉसिप) कर रहे थे। ए बब्बन, एगो सीक्रेट जानते हो? देवी बाबा के खनदान के? रमेसर बब्बन के कान मे फुसफुसाया। ना रे। कइसन सीक्रेट? अरे कहने को ई लोग बड़का घर के हैं, पर सुद्ध बांभन ना हैं लोग रे। का कहते हो!!! बब्बन की आँखें चौड़ी हो गईं। देवी बाबा तो मिसिर हैं। अरे मिसिर तो हैं पर एक खनदान मिसिराईन का है और दुसरका ललाइन का। रुक रुक तनिक ठहर। चल लम्पुआ के छपरी पर चाह (चाय) पियल जाय, वहीं पर किस्सा बतियाया जाई। चल गुरु।

अरे पूरा फिल्मी कहानी है यार। ई किस्सा देवी बाबा के बाबूजी के बाबूजी के है रे। गाँव के पुरनिया लोग बोलते हैं, उस जमाना में बड़का मिसिर (दादा जी) अपने जवानी में गज़ब सुंदर रहे। छौ फूट (छः फीट) लंबा सुंदर देह और चेहरा तो जैसे आग। एकदम सिरी रामचंदर जी के जइसन। गाँव के रामलीला में सिरी राम जी बनत रहे। सगरा गाँव उनके दंडवत परनाम करत रहे। उन्हीं के बियाह तय हुआ था तिवारी के छपरा गाँव के नर्मदा तिवारी के बिटिया से। दुन्नों परिवार एकदम टक्कर के रहे। बहुत बढ़िया मेल मिला था। चाहे खेत–बघार ले लो चाहे घर–दुवार ले लो चाहे पढ़ल–लिखल में ले लो। जेठ के लगन में शादी पड़ा, सात गाँव को बियाह का नेवता गया। बड़ा भरी बारात मिसिर बाबा के दुवार पर से चला। कई ठो तो हाथी और घोड़ा भी गया। घर के लेडीस लोग वर का परिछावन (आरती) किया और बारात रवाना हुआ। अभी मुसकिल से दस घर पार हुआ होगा की बारात रुक गया, दूल्हा की पालकी कहार रुक गया और हो–हल्ला होने लगा। कुछ देरी बाद पता चला की लाला पूरन चंद की छोटी बिटिया लाजवंती, सज धज कर, सिन्होरा (सिंदूरदान) लेकर बीच रास्ता पर बैठी है और जिद पर अड़ी है की हमारा बियाह इसी दूल्हा से होगा नहीं तो हम इनारा (कुआं) मे डूब के जान दे देंगे। पहिले हमसे बियाह होगा तब बारात आगे जाएगा। बड़े बुजुर्ग लोग उसको समझा कर हार गए पर उ टस से मस नहीं हो रही। एके जिद लगाई है की हमारा बियाह बड़का मिसिर से करवाओ, उनसे बात करवाओ। हार कर दूल्हा बने बड़का मिसिर पालकी से निकल के उसके सामने आए और बोले क्या चाहती हो? ऊ तो उनका चरण पकड़ के बैठ गयी की हम चार साल से आपको अपना पती मान के बैठे हैं। बियफे (वृहस्पतिवार) प्रदोष, एकादशी का व्रत करते हैं। सब देवता मनाते हैं की आप का साथ जीवन भर के लिए मिल जाए। अब तो हमारा जीवन मरण आपके ही लिए होगा। आप हमारा मांग भर कर ही आगे जा सकते हैं। दूल्हा बने मिसिर सोच मे पड़ गए। लाजवंती न जाने कब से उन्हें पति मान बैठी है। कई छोटी छोटी घटनाएँ आँखों के आगे तैर गईं। कभी कभार घर की महिलाओं के साथ पल भर को दिख जाती थी। एक बार मेला में झूला झूलने के लिए खुदरा नहीं होने पर उसकी झूले वाले से चिक चिक होते देख कर मैंने दस दस पैसे का खुदरा सभी लड़कियों के लिए दे दिया था। सब बड़ी प्रसन्न हो गयी थीं। कभी कभी छोटी भौजी से कढ़ाई सीखने आती तो थी। मैंने पीने के लिए जल मांगा तो भाभी की जगह वही ले आई थी। पूछा तो कहा था की भाभी बबुआ (छोटा बच्चा) को ले के बैठी हैं। फिर एक गहरी नज़र लाजवंती के मुख पर डाली। वह गहरे लाल रंग की साड़ी मे। सिन्होरा हाथ में लिए बड़ी बड़ी आँखों से अश्रुधार बहाती उन्हीं को याचना भरी नज़रों से ताक रही थी। अचानक मिसिर जी के मन में न जाने क्या आया, उसे कंधे से पकड़ कर उठाया, सिंदूर लिया और उसकी मांग भर दी। एक पल को बड़े बुजुर्गों की तो समझ में ही नहीं आया कि हुआ क्या? फिर लोगों के बतियाने की आवाजें तेज़ होने लगीं। ज़्यादातर ब्राह्मण बिरादरी के लोग इसे गलत बता रहे थे। उधर सिंदूर पड़ गया तो लाजवंती मिसिर जी के चरण स्पर्श

किए और लोग उसे उसके घर लेकर चले गए। कर अपने घर चली गयी। इधर बारात देर हो रही थी तो कुछ लोग आगे चलने को भी कहने लगे। खैर, थोड़ी हील हुज्जत के बाद बारात चली। वहाँ तिवारी जी के यहाँ सारी खबर पहुँच गयी थी पर वक़्त की नज़ाकत देखते हुए

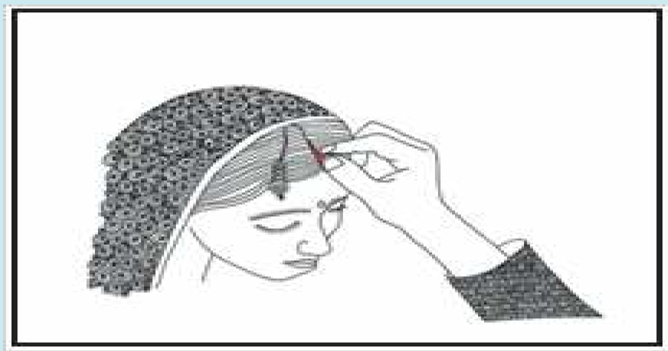

विधि विधान से विवाह सम्पन्न हुआ और कनिया दुल्हन विदा होकर अपनी ससुराल आ गयी।

लेकिन अभी बवाल शांत नहीं हुआ था। सो पंचायत बैठी। शास्त्रों के ज्ञाता त्रिभुवन चौबे, गुड्डू चौबे पंडित जी और गाँव के जाने माने लोग दोनों पक्ष के लोग सभी बैठे। शास्त्रसम्मत निर्णय यह हुआ कि अब तो सिंदूर पड़ गया तो विवाह हुआ माना गया। मगर गाँव में एक अंतरजातीय विवाह किसी के गले नहीं उतार रहा था। हिंदुस्तानी समाज पितृसत्तात्मक है, जहां वंश पुरुष के नाम से चलता है. इसलिए लड़की की तुलना में लड़के का अंतरजातीय विवाह करना आसानी से स्वीकार्य हो जाता है। श्श आगे बात अड़ गयी दोनों परिवारों के बीच संबंध को लेकर। क्योंकि विवाह तो दो कुटुम्बों का भी मिलन होता है। इस बात पर मिसिर जी के परिवार के लोग राजी न हों। अंततोगत्वा यह हुआ कि लाला पूरन चंद ने एक कोठी अलग से लाजवंती और मिसिर जी के नाम करने का प्रस्ताव दिया जिससे उनकी बिटिया को ससुराल की चिक चिक न सहनी पड़े। अब मिसिर जी के दोनों चरणों में से एक अपने पैतृक निवास में रहता तो दूसरा लाजवंती की कोठी में। कालांतर में मिसिर जी के एक पुत्री और तीन पुत्र हुए जिनमें से दो पुत्र लाजवंती की कोख से जन्मे। ये दोनों छोटका मिसिर खानदान के चिराग कहलाने लगे।

अब रमेसर का किस्सा अपने अंत की ओर बढ़ रहा था। तो इस तरह गाँव में किसी ने अंतरजातीय विवाह कर परंपरा तो तोड़ी पर यह साहस औरों के लिए मिसाल न बन सका क्योंकि लाजवंती ने अपनी पैतृक पहचान को पूरी तरह से मिटा डाला और जीवन मिसिर जी के लिए समर्पित कर दिया। उधर लाला पूरन चंद ने भी बेटी की खुशियों के लिए मिसिर परिवार से वैवाहिक सम्बन्धों को कभी जुबान पर भी न आने दिया।

का रे बब्बना का सोचने लगा रे? चाय का दूसरा गिलास रखते हुए रमेसर बोला। बब्बन गमछे का छोर कंधे पर डालते हुए नीचे ताकता रहा। उसे तिवारी जी की लड़की का चेहरा याद आने लगा जो कल गली से गुजरते समय धीरे से कह गयी थी, "हमें भूल जाना"।

'''''

*डॉ पिंकी पांडे*
*सी आर टी*

## प्रोफ़ायल पिक्चर

उस एक रॉंग कॉल ने जैसे मेरी बेरंग ज़िंदगी को रंगीन बना दिया था. वीराने में जैसे बहार आ गई थी.मेरा दिल एक आज़ाद पंछी की तरह ऊँची उड़ान भरने लगा था.

ये सब उस रॉंग कॉल वाले रंजीत की वजह से था, उसकी आवाज़ में ना जाने कैसी कशिश थी, कि ना चाहते हुए भी मैं उसके कॉल का इंतज़ार करती रहती थी. जिस दिन उसका कॉल नहीं आता, मैं तो जैसे बेजान सी हो जाती थी. उसका कॉल मेरे लिए एक नयी ऊर्जा का काम करता था.

गुड मॉर्निंग से लेकर गुड नाइट तक ना जाने कितने कॉल आ जाते थे उसके. उसकी खनकती आवाज़ मेरे कान मैं शहनाई सी बजाती थी. मीठी–मीठी बातें रस सा घोल जाती थीं. रंजीत मुझे अपनी सारी बातें बताने में ज़रा भी नहीं हिचकिचाता था. और एक मैं थी, जो चाहते हुए भी सारी बात नहीं बता पाती थी. मेरे अंदर की हीनभावना कुछ बोलने ही नहीं देती थी.

रंजीत ने मुझे बताया था, वो एक आर्मी अफ़सर था, पैर मैं दुश्मन की गोली लगने की वजह से उसका पैर काट दिया गया था. ये बात बताने में भी वो बिलकुल शर्माया नहीं बल्कि बड़े गर्व से बता रहा था. दो दिन हो गए थे रंजीत के फ़ोन कॉल को आए हुए, ये दो दिन दो बरस के समान लग रहे थे,वो मुझ से नाराज़ था, उसका नाराज़ होना शायद जायज़ भी था.

उसने सिर्फ़ इतना ही तो कहा था मुझ से. "लता व्हाट्सऐप पर अपनी प्रोफ़ायल पिक्चर लगा दो? "मैंने उसको डाँटते हुए कहा था "मेरी मर्ज़ी मैं लगाऊँ या ना लगाऊँ, तुम कौन होते हो मुझे ऑडर देने वाले?" रंजीत खिसिया सा गया गया.ओके कहते हुए उसने फ़ोन काट दिया. रंजीत अपनी प्रोफ़ायल पिक्चर (डीपी)रोज़ ही बदलता था. सुंदर–सुंदर फ़ोटो लगता था. और आर्मी ड्रेस की फ़ोटो में तो वो बहुत ही जंचता था.

मैंने सोचा रंजीत को खुश करने के लिए प्रोफ़ायल फ़ोटो लगा ही देती हूँ. लगाने से पहले मैंने अपने आप को फिर एक बार आइने में निहारा. आँखो के नीचे कालापन उसपर चढ़ा मोटे लेंस का चश्मा,चेहरे पर हल्की रेखायें,दाग़ धब्बे, तिल, पेट पर चरबी, कमर पर सिलवटें, मोटी, छोटी सी नाक, सिर के बालों में से झाँकतीं हुई सफ़ेदी. 'नहीं–नहीं' "मैं अपना फ़ोटो कैसे लगा सकती हूँ. " मैंने फ़ोटो लगाने का इरादा बदल दिया. रंजीत को कैसे समझाती मेरा फ़ोटो लगाने लायक़ है ही नहीं, काश ! रंजीत मेरी मजबूरी समझ पाता, और नाराज़ नहीं होता.

सारा दिन मोबाइल हाथ में पकड़े पकड़े रंजीत के कॉल का इंतज़ार करती रही. अचानक मेरा मोबाइल बजा –मानो कई जलतरंग एक साथ बज उठीं हों, रंजीत का नम्बर फ़्लैश होने लगा, मेरी तो जैसे लॉट्री ही लग गई. आँखे खुशी से चमक उठीं. मैंने बिना देर किए, फ़ोन उठा लिया, उधर से वही दिलकश आवाज़,जिसे सुन कर कानों को सुकून सा मिलता था, "मेरे कॉल का इंतज़ार कर रहीं थीं ना" रंजीत ने शरारती आवाज़ में कहा, "नहीं तो" मैंने झूट बोलते हुए कहा.

"कर तो रही थीं पर मानोगी नहीं, फ़ोन हाथ में ही पकड़ा हुआ था,तुरंत उठा भी लिया और क्या सबूत चाहिए. "हँसते हुए रंजीत ने कहा".

"कल कॉल क्यों नहीं किया?"मैंने गुस्सा होते हुए पूछा. 'अरे!' "मैं अपना फुल चेकप कराने गया था. उसमें टाइम तो लगता ही है." "क्या हुआ तुमको ?" मैंने घबराते हुए पूछा. "कुछ नहीं हुआ "चालीस के बाद कराते रहना चाहिये"तुम भी अपना चेकप कराती रहा करो?नसीहत देते हुए रंजीत ने कहा.

"अच्छा ये बताओ तुम्हारी रिपोर्ट आ गई? सब ठीक तो है ना रंजीत ? कुछ छिपा तो नहीं रहे हो?" मैंने घबराते हुए पूछा.

"रिपोर्ट आगई है,सब नॉर्मल है, थोड़ा ब्लड प्रेशर बढ़ा हुआ था, उसकी दबाई खा रहा हूँ. " चिन्ता की कोई बात नहीं है. रंजीत ने समझाते हुए कहा.

मैंने रात को ही व्हाट्सऐप पर गुलाब के फूलों वाली प्रोफ़ायल पिक्चर लगा दी. रंजीत को गुलाब के फूल बहुत पसंद थे. व्हाट्सऐप पर तो सिर्फ़ गुडमॉर्निंग और गुड नाइट ही होती थी. बाक़ी बातें तो फ़ोन पर ही होती थीं. समय पंख लगा के उड़ रहा था. एक महीना कैसे बीत गया इस का पता ही नहीं चला. मैं अपने आप को आइने में देखती तो सोलह साल की लड़की की तरह शर्मा सी जाती. ' गाल'सिंदूरी हो जाते. चेहरा चमकने लगता.

लता जी के गाने सुनती तो साथ में गुनगुनाने लगती, कभी कभी तो अपने आप ही पैर भी थिरकने लगते थे. "ये मुझ को क्या होता जा रहा था." शायद रंजीत की दोस्ती का खुमार था.मैं अपनेआप से ही बातें करने लगी थी.

रंजीत ने फ़ोन पर मिलने की अनुमति माँग कर मुझे उलझन में डाल दिया था. उस समय तो मैंने कह दिया था, सोच कर बताऊँगी. पर मैं तय ही नही कर पा रही थी, उसका फ़ोन आएगा तो मुझे क्या कहना है? मोबाइल बजने लगा, काँपते हाथ से उठाया,मेरे हैलो बोलने से पहले ही रंजीत ने बोलना शुरू कर दिया – "लता हमको अब मिल ही लेना चाहिए,ज़िंदगी का कोई भरोसा नहीं है, आज है, कल ना रहे. "ऐसा क्यों कह रहे हो, कुछ हुआ है क्या?" मैंने कुछ रूँधी हुई आवाज़ में पूछा.

नहीं ! कुछ नही हुआ, रंजीत हँसते हुए बोला "इतने दिनों से बस फ़ोन पर ही बात कर रहे हैं, एक बार मिलना भी तो चाहिये. अब आमने सामने ही बात करेंगे." रंजीत ने खुद ही जगह और टाइम तय कर दिया "और हाँ तुम तो मुझे पहचान ही लोगी, एक पैर वाला वहाँ मेरे सिवाय कोई दूसरा नहीं होगा".

"लता तुम गुलाबी साड़ी पहन कर आना, पहचान्ने में आसानी होगी" 'गुलाबी साड़ी?' मैंने ज़ोर दे कर कहा, "गुलाबी नहीं तो कोई और रंग की पहन लेना. "रंजीत ने कहा. "लता कल चार बजे मैं तुम्हारा इंतज़ार करूँगा 'और हाँ'! अब मैं फ़ोन नही करूँगा आमने–सामने ही बात करेंगे. "मैं कुछ बोल पाती उससे पहले ही उसने फ़ोन काट दिया.

ये रंजीत को क्या हो गया है?मिलने के लिए इतनी ज़िद क्यों कर रहा है. मेरी बात तो उसने सुनी ही नहीं, अपना ही राग अलापता रहा. 'गुलाबी साड़ी'! मुझे मेरे अतीत में खींच कर ले गई– माँ ने बताया, मुझे देखने लड़के वाले आ रहे हैं. लड़के का नाम मनोज था,जो इंजीनियर के पद पर कार्यरत था.

माँ ने गुलाबी साड़ी देते हुए कहा "ये साड़ी पहन लेना रूप निखर कर आयेगा." अब माँ को कौन समझाये,रूप रंग जैसा है वैसा ही रहेगा. माँ उबटन लगाने के लिये भी दे गईं. "माँ थीं चाह रही थीं किसी भी तरह मैं पसंद आ जाऊँ और मेरे हाथ पीले हो जायें.

शाम को मनोज और उसके माता पिता मुझे देखने के लिए आये. वही दिखावा, चाय की ट्रे लेकर मैं लड़के वालों के सामने उपस्थित हुई, मेरे साथ मेरी छोटी बहन 'उमा' भी थी, उन्होंने एक दो प्रश्न मुझ से पूँछे भी. मनोज अपने पिता के कान में कुछ फुसफुसाया ,देखने मुझे आया था पर नज़र उमा पर गड़ाये हुए था. उसकी मंशा मैं कुछ–कुछ समझ गई थी.

मनोज के पिता माँ से खी –खी करते हुए बोले–"हमारे लड़के को आपकी छोटी बेटी पसंद है, आप चाहें तो हम अभी कुछ शगुन कर देते हैं" माँ एकदम खड़ी हो गई और साफ़ इनकार करते हुए बोली, " पहले हम बड़ी बेटी का रिश्ता तय करेंगे उसके बाद में छोटी बेटी

का , और हाथ जोड़ते हुए उन्हें चले जाने को कहा."

माँ अपनी ज़िद पर अड़ी रहीं, मैंने उनको बहुत समझाया, जिसकी शादी पहले हो रही है उसकी हो जाने दो. बड़ी मुश्किल से माँ को समझा बुझा कर उमा की शादी मनोज से करवा दी. मुझे तो जैसे शादी के नाम से ही नफ़रत सी हो गई थी. मैंने शादी ना करने का फ़ैसला कर लिया. मैं बार–बार अपनी नुमाइश नही लगाना चाहती थी. माँ ने मुझे बहुत समझाया पर मैं अपनी ही ज़िद पर अड़ी रही. पढ़ाई पूरी कर के मैंने एक स्कूल में नौकरी कर ली.

माँ भी मेरी शादी की हसरत लिए हुए संसार से विदा हो गई. मैं जिस अतीत से पीछा छुड़ाना चाहती थी, आज वो फिर एक बार मेरे सामने पंख फैला कर खड़ा हो गया था. मोबाइल बजते ही मैं अतीत से बाहर आ गई. फ़ोन मेरी छोटी बहन उमा का था।

"दीदी कैसी हो ?आप से बात किए हुए बहुत दिन हो गये, अब तो आप के स्कूल में छुट्टी चल रही होंगी, यहाँ कुछ दिन के लिए आ जाओ आप का मन भी बदल जाएगा "दीदी आप बोल क्यों नही रही हो?" " तुम बोलने दोगी तब तो बोलूँगी" मैंने हँसते हुए कहा. उमा अपने को मेरा दोषी मानती थी इसलिए अक्सर ख़ुद ही फ़ोन कर लेती थी.माँ के जाने के बाद उसके फ़ोन भी आने कम हो गए थे.

घड़ी ने तीन बजने का संकेत दिया.मैं बेमन से उठी, रंजीत से मिलने के लिए तैयार होने लगी. ऑटो कर के रंजीत की तय करी जगह पहुँच गई. रंजीत को मेरी आँखे ढूँढने लगी. उसको ढूँढने में ज़्यादा देर नही लगी. सामने ही एक कुर्सी पर रंजीत बैठा था ,पास में ही बैसाखी रखी हुई थीं,हाथ में ताज़ा गुलाब का फूल था.

मैं एक पेड़ की ओट में खड़ी हो कर रंजीत को देखने लगी–इस उम्र में भी वो बहुत ही आकर्षक लग रहा था. गोरा रंग,बड़ी–बड़ी आँखे ,चौड़ा सीना ,लम्बा क़द ,काले सफ़ेद खिचड़ी वाले बाल.जो उसको और आकर्षक बना रहे थे.

रंजीत को देख कर मेरे अंदर दबी हुई हीन भावना फिर से एक बार जागृत हो गई. मन में अजीब अजीब से ख़याल आने लगे. रंजीत मुझे देख कर क्या सोचेगा? इस औरत से मिलने के लिया बेचौन था, जिस का 'ना रूप ना रंग.' मैंने रंजीत की तरफ़ से ख़ुद ही सोच लिया. नहीं–नहीं! "मैं रंजीत के सामने नहीं जा सकती, दूसरी बार नापसंदी का बोझ नहीं झेल पाऊँगी ." मैंने फुसफुसाते हुए कहा.

रंजीत से बिना मिले मैं घर लौट आई. मुझे मालूम था रंजीत बहुत ग़ुस्सा होगा. घर पहुँची ही थी, मोबाइल बज उठा. पर्स में से काँपते हाथ से मोबाइल निकाला. दिल ज़ोर–ज़ोर से धड़क रहा था, मेरे हैलो बोलने से पहले ही रंजीत ग़ुस्से से बोला–"तुम आई क्यों नहीं?"

झूट बोलते हुए मैंने दबी आवाज़ में कहा –"पड़ोस में एक सहेली का ऐक्सिडेंट हो गया था। वहीं थी मैं ," "बताना तो था मुझे या वो भी ज़रूरी नहीं समझा," ग़ुस्से से झल्लाते हुए, रंजीत ने फ़ोन काट दिया. मैं समझ गई रंजीत बहुत ही नाराज़ है मुझसे. शायद आज मैंने अपना सबसे अच्छा दोस्त खो दिया. भरी आँखो से आँसू गाल तक लुढ़क गये.

सुबह उठ कर सबसे पहले व्हाट्सऐप देखा रंजीत का गुडमॉर्निंग नहीं आया था,रोज़ बदलने वाली प्रोफ़ायल पिक्चर भी नही बदली थी. पूरे दिन में रंजीत ने एक बार भी व्हाट्सऐप चेक नहीं किया था. पूरा दिन निकल गया रंजीत के फ़ोन का इंतज़ार करते हुए, अब तो रात भी आधी बीत चुकी थी . मैंने सोच लिया था सुबह उठ कर सबसे पहले रंजीत को फ़ोन कर के माफ़ी माँगूँगी. उसको मना भी लूँगी. वो फ़ोन नहीं कर रहा तो क्या हुआ? मैं तो उसको कर सकती हूँ.

रात जैसे तैसे कटी,सुबह उठते ही व्हाट्सऐप खोल कर देखा, जल्दी में अपना चश्मा

लगाना भी भूल गई,धुंधला सा दिखाई दिया– "ओहो! लगता है रंजीत ने अपनी प्रोफ़ायल पिक्चर भी बदली है ! एक मेसिज भी है ! " मेरी आँखे चमक उठी,जान में जान सी आ गई.

मैंने जल्दी से अपना चश्मा साइड में रखे स्टूल से उठा कर लगाया और फ़ोटो देखने लगी –ये क्या ? रंजीत की फ़ोटो पर 'फूलों का हार' दिल धक्क से रह गया,जल्दी से मेसिज पढ़ना शुरू किया आज शाम चार बजे उठावनी की रस्म है ...... रंजीत को हार्टअटैक.........

इससे ज़्यादा पढ़ने की हिम्मत नहीं हुई आँखे पथरा सी गईं, कलेजा मुँह को आने लगा, दिल धोकनी की तरह ज़ोर–ज़ोर से धड़कने लगा, ज़ोर की हिचकी के साथ चीख़ निकल गई....

"रंजीत मुझे छोड़ कर ऐसे नहीं जा सकते हो ? प्लीज़ एक बार लौट आओ,मैं गुलाबी साड़ी पहन कर ही आऊँगी, हम आमने–सामने बात करेंगे. मैं तुमसे मिलने आऊँगी" विलाप करती रही,फूट–फूट कर रोती रही,ना कोई देखने वाला ना कोई सुनने वाला. हाय री विडम्बना !

मेरा अतीत फिर सामने पंख फैलाए दस्तक दे रहा था. फिर वही बेरंग ज़िंदगी,उजड़ा चमन, सूनापन,बेजान सा मोबाइल,धूल खाता रेडीओ,सब कुछ पहले जैसा.

इन सब की ज़िम्मेदार सिर्फ़ मैं ही थी ......

नीरा 'नीराम'
रश्मि गुप्ता
सीआरटी टेस्ट हाउस

## अंत समय के बोल

'एक सज्जन ने तोता पाल रखा था और उस से बहुत स्नेह करते थे, एक दिन एक बिल्ली उस तोते पर झपटी और तोता उठा कर ले गई वो सज्जन रोने लगे तो लोगो ने कहारू प्रभु आप क्यों रोते हो? हम आपको दूसरा तोता ला देते हैं वो सज्जन बोलेरू मैं तोते के दूर जाने पर नही रो रहा हूं। पूछा गयारू फिर क्यों रो रहे हो? कहने लगेरू दरअसल बा त ये है कि मैंने उस तोते को रामायण की चौपाइयां सिखा रखी थी वो सारा दिन चौपाइयां बोलता रहता था आज जब बिल्ली उस पर झपटी तो वो चौपाइयाँ भूल गया और टाएं टाएं करने लगा। अब मुझे ये फिक्र खाए जा रही है कि रामायण तो मैं भी पढ़ता हूँ लेकिन जब यमराज मुझ पर झपटेगा, न मालूम मेरी जिव्हा से रामायण की चौपाइयाँ निकलेंगी या तोते की तरह टाएं–टाएं निकलेगी।

'इसीलिए महापुरुष कहते हैं कि विचार–विचार कर तत्त्वज्ञान और रुपध्यान इतना पक्का कर लो कि हर समय, हर जगह भगवान के सिवाय और कुछ दिखाई न दे, हर समय जिव्हा पर राम–राम चलता रहे। अन्तिम समय ऐसा न हो हम भी तोते की तरह भगवान के नाम की जगह हाय–हाय करने लगें।
'जो प्राप्त है वही प्रयाप्त है'

*नीरज कौशिक*
*सी आर टी (टेस्ट हाउस)*

# पुस्तकों का महत्व

पुस्तकें हमारी मित्र हैं। वे अपना अमृत–कोष सदा हम पर न्योछावर करने को तैयार रहती हैं। अच्छी पुस्तकें हमें रास्ता दिखाने के साथ–साथ हमारा मनोरंजन भी करती हैं। बदले में वे हमसे कुछ नहीं लेतीं, न ही परेशान या बोर करती हैं। इससे अच्छा और कौन–सा साथी हो सकता है कि जो केवल कुछ देने का हकदार हो, लेने का नहीं।

पुस्तकें प्रेरणा का स्त्रोत एवं पुस्तकें प्रेरणा की भंडार होती हैं उन्हें पढ़कर जीवन में कुछ महान कर्म करने की भावना जागती है। महात्मा गाँधी को महान बनाने में गीता, टालस्टाय और थोरो का भरपूर योगदान था। भारत की आज़ादी का संग्राम लड़ने में पुस्तकों की भी महत्वपूर्ण भूमिका थी। मैथलीशरण गुप्त की 'भारत–भारती पढ़कर कितने ही नौजवानों ने आज़ादी के आदोंलन में भाग लिया था।

पुस्तकें विकास की सूत्रधार – पुस्तकें ही आज की मानव–सभ्यता के मूल में हैं। पुस्तकों के द्वारा एक पीढ़ी का ज्ञान दूसरी पीढ़ी तक पहुँचते–पहुँचते सारे युग में फ़ैल जाता है। विपिल महोदय का कथन है – "पुस्तकें प्रकाश–गृह हैं जो समयह के विशाल समुद्र में खड़ी की गई हैं "यदि हज़ारों वर्ष पूर्व के ज्ञान को पुस्तकें अगले युगतक न पहुँचती तो शायद एक वैज्ञानिक सभ्यता का जन्म न होता।

प्रचार का साधन – पुस्तकें किसी भी विचार, संस्कार या भावना के प्रचार का सबसे शक्तिशाली साधन हैं। तुलसी के 'रामचरितमानस' ने तथा व्यास–रचित महाभारत ने अपने युग को तथा आने वाली शताब्दियों की पूरी तरह प्रभावित किया। आजकल विभिन्न सामाजिक आंदोलन तथा विविध विचारधाराएँ अपने प्रचार–प्रसार के लिए पुस्तकों को उपयोगी अस्त्र के रूप में अपनाती हैं।

मनोरंजन का साधन – पुस्तकें मानव के मनोरंजन में भी परम सहायक सिद्ध होती हैं। मनुष्य अपने एकांत क्षण पुस्तकों के साथ गुजार सकता है। पुस्तकों के मनोरंजन में हम अकेले होते हैं, इसलिए मनोरंजन का आनंद और अधिक गहरा होता है। इसलिए किसी ने कहा है – "पुस्तकें जागत देवता है। उनकी सेवा करके तत्काल वरदान प्राप्त किया जा सकता है।

*प्रतिष्ठा भारद्वाज*

*यशिका भारद्वाज सीसीई*

# मोबाइल फ़ोन और कंप्यूटर का प्रभाव

मोबाइल फ़ोन और कंप्यूटर का बढ़ता प्रचलन – मोबाइल फ़ोन और कंप्यूटर आधुनिक युग के सबसे बढ़े वरदान हैं। इन दोनों ने इतनी रोचक और उपयोगी दुनिया बसा ली है कि आदमी इन्हीं की दुनिया में खोया रहना चाहता है। उन्नति की धरा के साथ चलने वाला हर मनुष्य दैनिक इन दोनों की सेवाएँ अवश्य लेता है।

सकारात्मक प्रभाव–मोबाइल फ़ोन और कंप्यूटर ने सांसारिक यात्रा को बहुत सरल और सुगम बना दिया है। इनसे बैंक, तेल–सेवा, बिल–अदायगी जैसी सेवाएँ सरल, त्वरित और निर्देष हो गई हैं। अब बैंकों के ए.टी.एम. बिना भेदभाव के चोबिसों घंटे पैसे उपलब्ध करवाते हैं। कंप्यूटर और इंटरनेट के द्वारा हम घर बैठे–बैठे अपने सभी बिल जमा करवा सकते हैं तथा यात्रा–टिकट ले सकते हैं। यहाँ तक कि खरीददारी भी ऑन लाइन हो गई है। इंटरनेट ने ज्ञान के विपुल भंडार मुफ्त उपलब्ध करा दिया हैं। कोई जिज्ञासु चाहे तो इंटरनेट के माध्यम से विश्व–भर की छोटी–से–छोटी जानकारी भी प्राप्त कर सकता है।

नकारात्मक प्रभाव–मोबाइल फ़ोन और कंप्यूटर के नकारात्मक प्रभाव भी सामने हैं। ये दोनों साधन उपयोगी को एक जगह पर बाँध कर बिठा देते हैं और उसकी चेतक को पूरी तरह केंद्रित कर लेते हैं परिणामस्वरुप लोग दैनिक कई घंटे इनमें खर्च कर देते हैं। सच मायऩा ` में दिन में 24 नहीं 20–21 घंटे रह गए हैं। इनके कारण बच्चों के खेल खत्म हो गए हैं, रिश्ते–नाते कम हो गए हैं, समाजिक संबंध ढीले पड़ गए हैं। मोबाइल और कंप्यूटर से संलिप्त व्यक्ति अकेली दुनिया की सुरंग में खोया हुआ अजनबी हो गया है जिसे सारी दुनिया को मुट्ठी में करने की ललक तो है किंतु किसी से बात करने की फुर्सत नहीं है। इस कारण लोगों की आँखों पर चश्मे चढ़ गए हैं, पेट में चर्बी चढ़ गई है। मोटापा, ह्रदयाघात, सुगर, तनाव जैसे बीमारियाँ बढ़ने लगी हैं। किसी ने सही कहा है–मोबाइल फ़ोन और कंप्यूटर ने ऐसे छेड़ी तान। पंछी पिंजरों में घुसे, भूल गए हैं उड़ान।।

इन दोनों साधनों का सबसे नकारात्मक प्रभाव है–अश्लीलता और अपसंस्कृति का प्रसार। बच्चे तड़क–भड़क वाले उतेजत कार्यक्रमों तथा नग्न दृश्यों में रूचि लेने लगे हैं। इस कारण समाज में छेड़छाड़, बलात्कार, चोरी आदि की आपराधिक घटनाएँ बढ़ने लगी हैं।

नकारात्मक प्रभाव से बचने के उपाये–नकारात्मक प्रभावों से बचने का सर्वोतम उपाय है–आत्म–संयम। आज अच्छे और बुरे सब प्रकार के कार्यक्रम दूरदर्शन और इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। ये आगे भी उपलब्ध रहेंगे। इनमें से अच्छे कार्यक्रम में रस लेना, उसका सीमित उपयोग करना उपभोक्ता पर निर्भर है और रहेगा। अश्लील कार्यक्रमों पर रोक लगाने में सरकार की, मीडिया की, जनमत की, सामजिक संघठनों की भी भूमिका हो सकती है। सरकार को चाहिए कि वह सेंसर का प्रभावी प्रयोग करके नकारात्मक प्रभावों को रोकने के लिए कदम उठाए।

*प्रतिष्ठा भारद्वाज*
*यशिका भारद्वाज सीसीई*

# वार्षिकीय

## तकनीकी,
## अनुसंधान एवं विकास
## में
## विशेष उपलब्धियां

# सीमेंट अनुसंधान और स्वतंत्र परीक्षण केन्द्र

## परीक्षण केंद्र – सीआरटी

केंद्र पांच कार्यक्रमों – सीमेंट और अन्य बंधक, अपशिष्ट उपयोग, अपवर्तक और चीनी मिट्टी की चीज़ें, मौलिक और बुनियादी अनुसंधान और स्वतंत्र परीक्षण के माध्यम से अपनी गतिविधियों को कार्यान्वित करता है। वर्ष के दौरान 40 प्रायोजित परियोजनाओं को पूरा किया गया और 6 कार्यक्रमबद्ध प्रोजेक्ट को आगे बढ़ाया गया। वर्ष के दौरान, राजस्थान, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, गुजरात और मध्य प्रदेश के 14 सीमेंट संयंत्रों के लिए एलसीएफ अध्ययन पूरा किया गया। अवधि के दौरान केंद्र द्वारा परीक्षण किए गए नमूनों की संख्या 11060 से अधिक थी।

केन्द्र ने वर्ष के दौरान निम्नलिखित विषयो पर भी अध्ययन किया:

- कम्पोजिट सीमेंट की अलग पीसाई द्वारा समग्र सीमेंट के प्रदर्शन में सुधार पर जांच
- चूना पत्थर कैल्साइट मिट्टी और संगमरमर अपशिष्ट कैलक्लाइंड मिट्टी सीमेंट मिश्रणों का तुलनात्मक मूल्यांकन
- सीमेंट और कंक्रीट के प्रदर्शन पर फ्लाई ऐश की प्रतिक्रिया और उनके प्रभाव में सुधार
- सीमेंट निर्माण में वोलास्टोनाइट खनिज के उपयोग पर जांच
- लो–ग्रेड चूना पत्थर का उपयोग करके सिंथेटिक स्लैग के विकास पर जांच

# खनन, पर्यावरण, संयंत्र इंजीनियरिंग और

## संचालन केंद्र – सीएमई

खनन, पर्यावरण, संयंत्र इंजीनियरिंग और ऑपरेशन केंद्र ने छह कार्यक्रम – भू विज्ञान–खनन; पर्यावरण प्रबंधन; प्रक्रिया अनुकूलन और उत्पादकता; ऊर्जा प्रबंधन; संयंत्र रखरखाव और परियोजना इंजीनियरिंग और सिस्टम डिजाइन और वर्ष के दौरान 44 प्रायोजित परियोजनाओं को पूरा किया। वर्ष के दौरान अनिवार्य ऊर्जा लेखा परीक्षा आयोजित की जिसमें 14 प्रतिभागियो ने भाग लिया।

केंद्र ने पर्यावरण निगरानी हेतु निम्नलिखित अध्ययन किया :

- तीन मौसमों के दौरान दिल्ली में एक निर्माण स्थल के लिए पर्यावरण निगरानी अध्ययन, जिसके तहत परिवेशी वायु, निर्माण जल, मिट्टी की गुणवत्ता, और परिवेशीय शोर की निगरानी की गई।
- हरियाणा के पानीपत में स्थित हरियाणा बिजली उत्पादन निगम लिमिटेड के थर्मल पावर प्लांट में पर्यावरण निगरानी।
- अलीगढ़ और परिछा (झाँसी) में स्थित उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड के दो थर्मल पावर प्लांट में पर्यावरण निगरानी।

केंद्र द्वारा परियोजना इंजीनियरिंग और सिस्टम डिजाइन (पीएसडी) के अंतर्गत निम्नलिखित अध्ययन किए गए:

- मेघालय, पुर्वीय जैंतिया हिल्स, मेघालय में 1.0 एमटीपी उजचं सीमेंट प्लांट स्थापित करने के लिए विस्तृत टीईएफआर
- सीसीआई बोकाजान, असम में नई 1200 टीपीडी क्लिंकरिसेशन लाइन परियोजना के लिए नुकसान का आकलन और परियोजना पुनरुद्धार अध्ययन।
- गुवाहाटी, असम में वर्तमान वीआरएम के साथ बॉल मिल सर्किट स्थापित करने के लिए विस्तृत तकनीकी व्यवहार्यता रिपोर्ट

- कांगो गणराज्य में 600 टीपीडी सीमेंट प्लांट स्थापित करने के लिए के लिए परियोजना निगरानी और नियंत्रण (पीएमसी) परामर्शी सेवाएं

## निर्माण विकास और अनुसंधान केंद्र – सीडीआर

निर्माण विकास और अनुसंधान केंद्र (सीडीआर) राष्ट्र के लिए टिकाऊ और स्थायी नागरिक बुनियादी ढांचे को विकसित करने में योगदान दे रहा है। केंद्र चार कार्यक्रमों जैसे संरचनात्मक अनुकूलन और डिजाइन, कंक्रीट प्रौद्योगिकी, संरचनात्मक मूल्यांकन और पुनर्वास, और निर्माण प्रौद्योगिकी और प्रबंधन के माध्यम से सीमेंट, कंक्रीट और निर्माण उद्योगों को सेवाएं प्रदान करता है। केंद्र ने इस वर्ष के दौरान 284 प्रायोजित परियोजनाएं संचालित कीं।

### केंद्र ने वर्ष के दौरान निम्नलिखित अध्ययन किया :

- अल्ट्रा उच्च निष्पादन कंक्रीट (युएचपीसी) का विकास – युएचपीसी के लिए नैनो प्रौद्योगिकी का उपयोग
- मैसर्स इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन, फरीदाबाद के लिए सीमेंट कंक्रीट और कंक्रीट आधारित प्रीकास्ट बिल्डिंग उत्पादों के प्रदर्शन में सुधार के लिए कार्बन नैनोट्यूब के अनुप्रयोग पर जांच
- मेसर्स टाटा स्टील के लिए कंक्रीट में एक बढ़िया एग्रीगेट और मोटे एग्रीगेट (एयर कूल्ड) के रूप में फेरोक्रोम स्लैग के उपयोग पर अध्ययन
- मेसर्स टाटा स्टील के लिए मिश्रित स्लैग (बीएफ स्लैग और एलडी स्लैग का मिश्रण) का उपयोग इसके पीएससी पर स्थायित्व अध्ययन
- स्वयं–संकुचित कंक्रीट
- विशेष अनुप्रयोगों के लिए कंक्रीट मिक्स डिज़ाइन
- स्टील फाइबर के साथ और बिना घर्षण प्रतिरोधी कंक्रीट
- जियोपॉलिमर कंक्रीट का विकास और उपयोग

जियोपॉलीमर कंक्रीट इंटरलॉकिंग पेवर ब्लॉक का उपयोग करके फुटपाथ कलाकारों के एक परीक्षण खिंचाव का उद्घाटन

- सी एंड डी अपशिष्ट का उपयोग करके कम यातायात मात्रा कंक्रीट सड़कों का डिज़ाइन
- कंक्रीट संरचनाओं के सेवा जीवन पर अनुपूरक सीमेंटीय पदार्थ (एससीएम) (एकल और बहु मिश्रण) का प्रभाव, स्थायित्व / सेवा जीवन के अध्ययन सहित
- उच्च शक्ति कंक्रीट के कतरनी और संपीड़न डिजाइन पर प्रायोगिक अध्ययन जिसमें संवर्धित लचीलापन और अग्नि प्रतिरोध पर फाइबर का प्रभाव शामिल है।

# गुणवत्ता प्रबंधन, मानक और अंशांकन सेवा केंद्र – सीक्यूसी

कुल गुणवत्ता प्रबंधन, अंतर–प्रयोगशाला सेवाएं, मानक संदर्भ सामग्री और अंशांकन सेवाएं इन चार कार्यक्रमों के तहत गुणवत्ता प्रबंधन, मानक और अंशांकन सेवाओं के लिए केंद्र की गतिविधियों को आयोजित किया गया था । ये गतिविधियाँ गुणवत्ता प्रबंधन के सभी पहलुओं को संबोधित करती हैं और भारत और विदेशों में सीमेंट उद्योग, आर एंड डी संस्थानों, कंक्रीट और संबद्ध निर्माण सामग्री प्रयोगशालाओं को मानकीकरण और अंशांकन सेवाओं की पूरी श्रृंखला प्रदान करती हैं। आंतर–प्रयोगशाला सेवाएं की गतिविधियों को बढ़ावा दिया गया और आईएसओ 17043:2010 के अनुसार दस नई प्रवीणता परीक्षण (पीटी) योजनाएं पूरी की गईं। केंद्र द्वारा तीन प्रायोजित परियोजनाएं पूरी की गईं।

10 भारतीय निर्देशक द्रव्य (बीएनडी), भारतीय प्रमाणित संदर्भ सामग्री (सीआरएम) केंद्र द्वारा विकसित किया गया था। ये बीएनडी भारत में राष्ट्रीय मानकों के संरक्षक, सीएसआईआर–नेशनल फिजिकल लेबोरेटरी (एनपीएल) से एसआई इकाइयों के लिए अपनी अनुगामी क्षमता प्राप्त करते हैं। भारतीय निर्देशक द्रव्य (बीएनडी) एक भारतीय संदर्भ सामग्री है। केंद्र द्वारा 1700 उपकरणो का अंशांकन किया गया।

16 अगस्त, 2018 को सीएसआईआर– एनपीएल में माननीय मंत्री डॉ. हर्षवर्धन द्वारा एनसीबी बीएनडी का विमोचन

21 मई 2018 को विश्व मेट्रोलॉजी दिवस के अवसर पर बीएनडी प्रमाणपत्रों के लिए सीएसआईआर–एनपीएल और एनसीबी के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

01 जनवरी 2019 को मनाए जाने वाले एनसीबी दिवस के अवसर पर डीजी–एनसीबी और केंद्रों के प्रमुखों द्वारा एनसीबी बीएनडी के दूसरे बैच का विमोचन

# औद्योगिक सूचना सेवा केंद्र – सीआईएस

केंद्र ने औद्योगिक सूचना और डेटा बैंक, एकीकृत आईटी समाधान, प्रकाशन, सेमिनार और सम्मेलन, अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय संपर्क और छवि निर्माण जैसे छह कार्यक्रमों के माध्यम से अपनी गतिविधियों को आगे बढ़ाया। सीआईएस ने सीमेंट, भवन निर्माण सामग्री और निर्माण उद्योगों की जानकारी एकत्र करता है और उसका प्रसार करता है। अन्य सुविधाओं के अलावा, केंद्र में एक आधुनिक पुस्तकालय और एक कंप्यूटर केंद्र शामिल है।

एनसीबी बल्लभगढ़ पुस्तकालय

| सदस्यता | |
|---|---|
| भारतीय | विदेशी |
| निर्माण उद्योग विकास परिषद (सीआईडीसी), नई दिल्ली | निर्माण उद्योग विकास परिषद (सीआईडीसी) |
| इंडियन रोड्स कांग्रेस (आईआरसी), नई दिल्ली | इंडियन रोड्स कांग्रेस (आईआरसी), नई दिल्ली |
| भारतीय खनन और इंजीनियरिंग जेएल, भुवनेश्वर | |
| मैटेरियल्स रिसर्च सोसाइटी ऑफ इंडिया, बेंगलुरु | |

# प्रकाशन

एनसीबी प्रकाशनों के माध्यम से एनसीबी की प्रौद्योगिकियों और सेवाओं की जानकारी नियमित रूप से प्रसारित की जाती है। सीमेंट और संबंधित निर्माण सामग्री उद्योगों के बीच गतिविधियों, प्रौद्योगिकी और परामर्श सेवाओं को व्यापक रूप से लोकप्रिय बनाने और बढ़ावा देने के प्रयास जारी थे। वर्ष के दौरान निम्नलिखित प्रकाशनों को प्रकाशित किया गया था।

एनसीबी वार्षिक रिपोर्ट 2017–18 अंग्रेजी और हिंदी स्वतंत्र संस्करणों में
कम्पेंडियम – "सीमेंट उद्योग – भारत 2018" एवं "सीमेंट उद्योग – भारत 2019"
बुलेटिन – सीमेंट, कंक्रीट और भवन निर्माण सामग्री पर 16 वीं एनसीबी अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, 03–06 दिसंबर 2019, नई दिल्ली

# सतत् शिक्षा सेवा केंद्र (सीसीई)

निरंतर शिक्षा सेवा केंद्र (सीसीई) 1972 में अपनी स्थापना के बाद से सीमेंट, कंक्रीट और निर्माण उद्योगों से प्रतिभागियों के लिए सभी स्तरों पर विभिन्न आवश्यकता–आधारित और उद्योग–उन्मुख प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर रहा है। अब तक, 2602 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं। उद्योग के पेशेवरों और विज्ञान में नए स्नातकों / स्नातकोत्तरों और इंजीनियरिंग के विभिन्न विषयों से जुड़े कुल 43548 प्रतिभागियों को लाभान्वित किया गया है। भारत और विदेशों से कई सरकारी संगठनों / निजी संगठनों ने अपने इंजीनियरों और प्रोफेशनल के लिए एनसीबी की प्रशिक्षण सेवाओं का लाभ उठाया है।

वर्ष 2018–19 के दौरान, कार्यक्रमों में भाग लेने वाले कुल 1309 प्रतिभागियों के साथ 69 प्रशिक्षण कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किए गए।

आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों की मुख्य बातें इस प्रकार हैं:

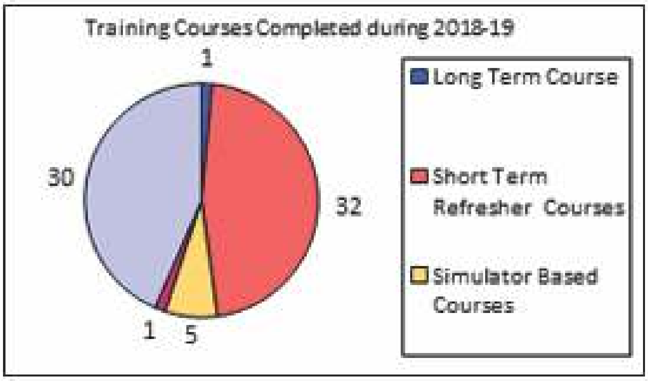


| पाठ्यक्रम का प्रकार | संख्या |
|---|---|
| दीर्घकालिक पाठ्यक्रम सीमेंट प्रौद्योगि. की में पीजी डिप्लोमा | 1 |
| शॉर्ट टर्म रिफ्रेशर कोर्स | 32 |
| सिम्युलेटर आधारित पाठ्यक्रम | 5 |
| प्रशिक्षण कार्यक्रमों से संपर्क | 1 |
| विशेष समूह प्रशिक्षण कार्यक्रम | 30 |

# महत्वपूर्ण घटनाएँ

# 16वां अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार

## "16वां अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार"
## "स्वच्छ, हरित से सतत् विकास"

सीमेंट, कंक्रीट और भवन निर्माण सामग्री पर आयोजित 16वां "अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार" 03 से 06 दिसम्बर को मानेकशॉ सेंटर दिल्ली में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

सेमिनार के उदघाटन के दिन एक विशेष सत्र के दौरान माननीय रेल मंत्री, वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री पीयूष गोयल जी ने "स्वच्छ, हरित से सतत विकास" को सेमिनार का विषय बनाने के लिए तथा वर्ष 2017–18 एवं 2018–2019 के ऊर्जा पर्यावरण और पूर्ण गुणवत्ता उत्कृष्टता के सभी विजेताओं को बधाई दी। उन्होने प्रकाश डाला कि 10 ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था के लक्ष्य के लिए हमारे सीमेंट उत्पादन क्षमता 900 मिलियन टन पहुंचनी चाहिए। उन्होने अर्थव्यवस्था में सुधार तथा प्लास्टिक कचरे का उपयोग करने के लिए सीमेंट उद्योग की प्रशंसा की। उन्होने देश के निर्माण में विशाल योगदान एवं सतत् विकास की और कार्य करने तथा वैकल्पिक ईंधन के उपयोग पर सीमेंट उद्योग का धन्यवाद दिया। उनके मत के अनुसार आधुनिक भारत का निर्माण एवं देश के भविष्य की नींव सीमेंट तथा सीमेंट उद्योग के बिना असंभव है। उन्होने सीमेंट उद्योग से दिव्यांग जन को रोजगार एवं जो कर्मचारी अपने संबंधित संगठनों में अनुबंध आधार पर लगे हुए हैं उनकी सामाजिक सुरक्षा लाभ जैसे ई.एस.आई., पेंशन आदि का विस्तार करने की दिशा में सार्थक कदम उठाने का आह्वान किया।

सेमिनार में पहले दिन" जलवायु परिवर्तन – एक खतरा या सीमेंट उद्योग के लिए अवसर" और "निर्माण उद्योग – परिपत्र अर्थव्यवस्था का अभिसरण बिन्दु"विषयों पर पैनल चर्चा में भाग लिया।

सेमिनार में डॉ. ऐ के चटर्जी, प्रो.रविन्द्र गेटू और डॉ. डी के मिश्रा जैसे प्रख्यात वक्ताओं ने "मिश्रित सीमेंट की स्थिरता, कंक्रीट सिस्टम की स्थिरता "तथा "वैकल्पिक बाइंडर्स और स्मार्ट सीमेंट – कंपोजिट" आधारित विषयों पर अपनी प्रस्तुतियाँ दीं।

सीमेंट, कंक्रीट एवं भवन निर्माण सामग्री से संबंधित विषयों पर सेमिनार में चार दिनों के दौरान 24 संगोष्ठी, तकनीकी विचार विमर्श तथा 193 प्रस्तुतियाँ दीं। सेमिनार के दौरान 78 अग्रणी उपकरण निर्माता, सेवा प्रदाताओं ने अपने तकनीकी कौशल, नए उत्पादों और सेवाओं का प्रदर्शन किया।

सेमिनार में भारत के विभिन्न प्रान्त की सांस्कृतिक आधारित एक रंगारंग कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया

## "कॉम्पेंडियम – सीमेंट इंडस्ट्री इंडिया 2019 का विमोचन"

3 दिसम्बर 2019 को मानेकशॉ सेंटर दिल्ली में माननीय वाणिज्य मंत्री श्री पियूष गोयल जी द्वारा कॉम्पेंडियम का विमोचन

3 दिसम्बर 2019 को मानेकशॉ सेंटर दिल्ली में माननीय वाणिज्य मंत्री श्री पियूष गोयल जी द्वारा इस संक्षेप का विमोचन किया गया। श्री महेंद्र सिंघी (अध्यक्ष, बीओजी और अध्यक्ष सीएमए), श्री अनिल अग्रवाल (संयुक्त सचिव, डीपीआईआईटी) के साथ रिलीज के दौरान डीजी–एनसीबी भी मौजूद थे।

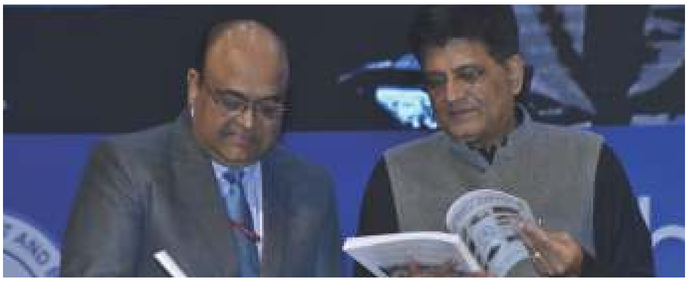

## "कॉम्पेंडियम – सीमेंट इंडस्ट्री इंडिया 2018 का विमोचन"

5 फरवरी 2019 को नई दिल्ली के राजीव गांधी भवन में माननीय वाणिज्य मंत्री श्री सुरेश प्रभु द्वारा कॉम्पेंडियम का विमोचन

5 फरवरी 2019 को राजीव गांधी भवन, नई दिल्ली में माननीय वाणिज्य मंत्री श्री सुरेश प्रभु द्वारा कॉम्पेंडियम का विमोचन किया गया। श्री महेंद्र सिंघी (अध्यक्ष, बीओजी और अध्यक्ष सीएमए), श्री अनिल अग्रवाल (संयुक्त सचिव, डीपीआईआईटी) के साथ रिलीज के दौरान डीजी–एनसीबी भी मौजूद थे। इस समारोह में वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय (एमओसी और आई) के वरिष्ठ अधिकारियों, एनसीबी अधिकारियों, सीमेंट उद्योग और सीमेंट उद्योग संघ के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। श्री सुरेश प्रभु ने रिलीज के दौरान इस बात पर जोर दिया कि सीमेंट उद्योग भारत के विकास और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। और उद्योग ने संयंत्र संचालन में ऊर्जा दक्षता में सुधार लाने पर ध्यान केंद्रित किया है। उन्होंने एनसीसीबीएम से सीमेंट के उत्पादन में इस्तेमाल होने वाली पुनरावर्तन सामग्री के बारे में सोचने का सुझाव दिया।

# "अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं की समीक्षा

## डीपीआईआईटी, उद्योग भवन, नई दिल्ली में अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं की समीक्षा

09 मई 2019 को डीपीआईआईटी, दिल्ली में एनसीबी द्वारा राष्ट्रीय महत्व के विभिन्न अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं पर प्रस्तुति आयोजित की गई थी। श्री अनिल अग्रवाल, संयुक्त सचिव–डीपीआईआईटी ने महानिदेशक–एनसीबी, केंद्र प्रमुखों, वैज्ञानिकों और एनसीबी के इंजीनियरों के साथ विभिन्न अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं की प्रगति और निष्कर्षों की समीक्षा की। एनसीबी के केंद्रों के प्रमुख ने भी अपने संबंधित केंद्रों की विभिन्न गतिविधियों को प्रस्तुत किया।

उद्योग भवन, नई दिल्ली में अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं की समीक्षा करते हुए संयुक्त सचिव–डीपीआईआईटी

विभिन्न अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं के बारे में बैठक के दौरान विचार–विमर्श किया गया। कुछ परियोजनाओं में उच्च शक्ति कंक्रीट, निम्न–श्रेणी के चूना पत्थर का उपयोग करके सीमेंट उत्पादन, मिश्रित सीमेंट का स्थायित्व, जियोपॉलिमर कंक्रीट, मिश्रित सीमेंट आदि शामिल हैं।

संयुक्त सचिव (डीपीआईआईटी) ने एनसीबी वैज्ञानिकों और इंजीनियरों को उनके अच्छे काम के लिए सराहा। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं को समयबद्ध तरीके से पूरा किया जाना चाहिए।

# राष्ट्रीय तकनीकी दिवस

11 मई को भारत में हर साल राष्ट्रीय तकनीकी दिवस मनाया जाता है, जो शक्ति की वर्षगांठ की याद दिलाता है। शक्ति पोखरण परमाणु परीक्षण है जो 11 मई, 1998 को आयोजित किया गया था। हमारे दैनिक जीवन में यह दिन विज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालता है। एनसीबी में 11 मई 2018 को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस उत्साह और जोश के साथ मनाया गया।

डॉ. डी के असवाल, निदेशक, सीएसआईआर – एनपीएल, नई दिल्ली ने इस अवसर पर विशेष अतिथि के रूप में शोभा बढ़ाई और हमारे दैनिक जीवन, विज्ञान और प्रौद्योगिकी में माप की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए चर्चा की। उन्होंने पोखरण परमाणु परीक्षण, मिसाइल प्रौद्योगिकी और भारत को परमाणु ऊर्जा बनाने में स्वर्गीय डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम की भूमिका पर श्रो ताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

# "अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं की समीक्षा

## फोरम ऑफ साइन्स अँड टेक्नालॉजी (एफ़एसटी) / साइन्स और टेक्नालजी इंटरएक्टिव मीट (एसटीआईएम)

यह फोरम एनसीबी के वैज्ञानिक कर्मचारियों के बीच संवादात्मक चर्चा प्रदान करता है। वैज्ञानिकों और इंजीनियरों को सीमेंट, रसायन विज्ञान, सिविल इंजीनियरिंग, पर्यावरण, प्रक्रिया प्रौद्योगिकियों, ऊर्जा, प्रबंधन, माप, आदि के विज्ञान और प्रौद्योगिकियों के विभिन्न क्षेत्रों में नवीनतम घटनाओं और रुझानों से अवगत कराने के लिए यह बैठक मंच के रूप में कार्य करती है।

वर्ष 2018–19 के दौरान, एफएसटी की 7 बैठकें आयोजित की गई थी:

| अ. क्र. | तिथि | व्याख्यान का विषय | वक्ता |
|---|---|---|---|
| 1 | 24 जुलाई 2018 | सी ऍड डी अपशिष्ट का प्रसंस्करण और उपयोग | श्री अरुण कुमार शर्मा<br>सहायक उपाध्यक्ष– ऑपरेशन आईएल और एफ़एस एनवायरनमेंटल इन्फ्रास्ट्रक्चर एंड सर्विसेज लिमिटेड |
| 2 | 28 दिसंबर 2018 | सीआरएम–कम्पोजिट सीमेंट के विकास के लिए पद्धति | श्री वी नागा कुमार<br>श्री सुरेश शॉ |
| 3 | 12 फरवरी 2019 | कठोर पेवमेंट–प्रचलित अभ्यास और आगे का निर्माण और पुनर्वास | श्री निखिल कौशिक<br>श्री वैभव चावला |
| 4 | 15 फरवरी 2019 | सीमेंट रोटरी भट्ठी में खतरनाक संयुक्त कचरे का सह–प्रसंस्करण | श्री रामचंद्र राव<br>श्री प्रतीक शर्मा<br>श्री आनंद बोहरा |
| 5 | 08 मार्च 2019 | मौसम परिवर्तन शमन के लिए भारत और चीन में उच्च मात्रा फ्लाई ऐश अनुप्रयोग | डॉ. धनादा कान्त मिश्रा<br>अनुसंधान विद्वान का दौरा, हाँगकाँग विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय का सिविल और पर्यावरण इंजीनियरिंग विभाग |
| 6 | 13 मार्च 2019 | अलग–अलग ईंधन के लिए सीमेंट प्लांट / एलसीएफ़ का एलसीएफ़ अध्ययन | श्री जी जे नायडू<br>डॉ. सुरेश पल्ला |
| 7 | 15 मार्च 2019 | अल्ट्रा उच्च प्रदर्शन कंक्रीट | श्री अभिषेक सिंह<br>श्री पीयूष मित्तल |

प्रो. डॉ. डी मिश्रा, हांगकांग विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में अनुसंधान विद्वान का दौरा "मौसम परिवर्तन शमन के लिए भारत और चीन में उच्च मात्रा फ्लाई ऐश अनुप्रयोगों" पर चर्चा

# एनसीबी दिवस समारोह

27 दिसंबर 2018 को 56 वां एनसीबी दिवस बहुत उत्साह और जोश के साथ मनाया गया। श्री–महेंद्र सिंघी, अध्यक्ष–एनसीबी, ने इस अवसर की शोभा बढ़ाई। उन्होंने सभा को संबोधित किया और एनसीबी के कर्मचारियों के साथ बातचीत की।

समारोहों के हिस्से के रूप में, वैज्ञानिकों, इंजीनियरों और सहायक कर्मचारियों को, जिन्होंने अपने क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया उन्हे सम्मानित और पुरस्कृत किया। श्री महेंद्र सिंघी, अध्यक्ष–एनसीबी, और डॉ. बी एन महापात्र, डीजी–एनसीबी ने प्राप्तकर्ताओं को सम्मानित किया।

'सर्वोत्तम वैज्ञानिक पुरस्कार' श्री पी. अनिल कुमार, श्री डी पवन कुमार (हैदराबाद), श्री नितिन चौधरी, श्री पी श्रीकांत, डॉ. सुरेश पल्ला और श्री अंकित शर्मा को दिया गया और 'सर्वोत्तम सहायक स्टाफ पुरस्कार' श्री गौरव भटनागर, श्री महेश मिश्रा, श्री मनोज खंडाई को दिया गया और सुश्री ए सुष्मिता (हैदराबाद) तकनीकी स्ट्रीम में और प्रशासक स्ट्रीम में श्री कपिल इस्तवाल, श्री अजय चौहान और श्री रविंदर सिंह को दिया गया।

इस अवसर पर एनसीबी– प्रौद्योगिकी संसाधन केंद्र (टीआरसी) का उद्घाटन भी श्री महेंद्र सिंघी, अध्यक्ष–एनसीबी द्वारा किया गया।

माननीय श्री महेंद्र सिंघी, अध्यक्ष–एनसीबी द्वारा एनसीबी–प्रौद्योगिकी संसाधन केंद्र (टीआरसी) का उद्घाटन

श्री महेंद्र सिंघी, अध्यक्ष–एनसीबी का व्याख्यान

महानिदेशक–एनसीबी का व्याख्यान

# शिक्षाविदों के साथ बातचीत

महानिदेशक–एनसीबी ने मानव रचना यूनिवर्सिटी कैंपस, फरीदाबाद में "हरित रसायन और प्रौद्योगिकी में हाल ही में प्रगति" पर पाठ्यक्रमों का उद्घाटन किया और हरे रंग की सीमेंट / क्लिंकर में उभरते रुझानों को चिन्हंकित किया

महानिदेशक–एनसीबी ने राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान वारंगल (एनआईटीडबल्यू) का दौरा किया और निदेशक (प्रभारी) और एनआईटीडबल्यू के वरिष्ठ संकाय के साथ उद्योग – अनुसंधान और विकास संगठन और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के लिए अकादमिक संपर्क बढ़ाने के लिए बातचीत की: देश के निरंतर विकास के लिए स्वस्थ।

प्रो धनादा कांत मिश्रा, हांगकांग विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में अनुसंधान विद्वान का दौरा करते हुए एनसीबी के विज्ञान और प्रौद्योगिकी के लिए फोरम में "भारत और चीन में जलवायु परिवर्तन शमन के लिए उच्च मात्रा फ्लाई ऐश अनुप्रयोग" पर वक्तृत्व किया।

महानिदेशक–एनसीबी और मानव रचना विश्वविद्यालय (एमआरयू) के उच्च अधिकारियों ने एनसीबी विशेषज्ञों को संकाय के रूप में सशक्त बनाने की संभावना पर चर्चा की।

महानिदेशक–एनसीबी ने केआईटीएस–सिविल इंजीनियरिंग विभाग द्वारा आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में काकतीय प्रौद्योगिकी और विज्ञान (केआईटीएस), वारंगल, तेलंगाना के छात्रों के लिए "कुल गुणवत्ता प्रबंधन" पर एक अतिथि व्याख्यान दिया।

एनसीबी और बिरला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साइंस (बीआईटीएस), पिलानी ने एक सहयोग किया है, जिसमें बीआईटीएस–पिलानी के छात्र एनसीबी में अपनी इंटर्नशिप करेंगे। बीआईटीएस पिलानी ने एनसीबी में प्रैक्टिस स्कूल (इंटर्नशिप) –II के तहत अपने तीन छात्रों के अपने पहले बैच को 5 महीने की अवधि (जनवरी 19 से शुरू) के लिए प्रतिनियुक्त किया।

# इंडस्ट्री के साथ बातचीत

सीबी अधिकारियों ने रेलवे स्लीपरों के जीवन में सुधार के लिए वर्तमान सुविधाओं और विशेषज्ञता का उपयोग करने की संभावनाओं की खोज के लिए बैठक की

सीएसआईआर–इंस्टीट्यूट मैटेरियल्स मैनेजमेंट टेक्नोलॉजी (आईएमएमटी), भुवनेश्वर द्वारा आयोजित "संधारणीय पर्यावरण के लिए औद्योगिक और खनन कचरे का उपचार और उपयोग" के कार्यशाला सह प्रशिक्षण कार्यक्रम में मूल्य–वर्धित सीमेंट और निर्माण सामग्री के लिए औद्योगिक और खनन अपशिष्टों के पुनर्चक्रण के महत्व पर डीजी–एनसीबी ने प्रकाश डाला।

मस्कत में एक सीमेंट अनुसंधान और विकास केंद्र की स्थापना में सहयोग के लिए छब्ठ और ओमान सीमेंट कंपनी के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर। एनसीबी को केंद्र की स्थापना के लिए ओमान को अपनी परामर्श सेवाएं और विशेषज्ञ सलाह प्रदान करने पर गर्व है।

मुंबई में अंबुजा सीमेंट कॉर्पोरेट कार्यालय, की तकनीकी टीम के साथ चर्चा।

एनसीबी ने उद्योग की नवीनतम आवश्यकता के साथ अपनी गतिविधियों के साथ अपनी गतिविधियों को ठीक करने के लिए दक्षिणी भारत के सीमेंट उद्योग के पेशेवरों के साथ बातचीत की।

एनसीबी तकनीकी टीम ने ओमान में अनुसंधान एव विकास केंद्र की स्थापना के साथ–साथ सीमेंट के उत्पादन की लागत को कम करने के मुख्य उद्देश्यों के साथ ओमान सीमेंट कंपनी का दौरा किया।

मुंबई में अल्ट्राटेक सीमेंट की तकनीकी टीम के साथ चर्चा।

# एनसीबी में कर्मचारी सुगति

सुरक्षा समिति द्वारा फरवरी 2019 में सड़क सुरक्षा और रक्षात्मक ड्राइविंग पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया था। प्रशिक्षण के दौरान, सड़क सुरक्षा जागरूकता से संबंधित वीडियो दर्शकों को दिखाए गए थे कि सड़क पर रहते हुए किसी भी तरीके / सावधानियों के बिंदुवार वर्णन के साथ; या तो एक कार चालक, मोटर साइकिल चालक, पैदल यात्री या सिर्फ एक यात्री के रूप में। प्रशिक्षण विभिन्न कारकों पर ध्यान केंद्रित किया गया था, जिन्हें रक्षात्मक रूप से ड्राइविंग करते समय ध्यान में रखा जाना चाहिए, जो अंततः ऐसे दुर्घटनाओं के कारण दुर्घटनाओं और चोटों में कमी लाता है।

"शीर्ष प्रबंधन से आंतरिक संचार" नियमित रूप से आयोजित किया जाता है जिसमें उन कर्मचारियों को सम्मानित किया जाता है जिन्होंने अपने संबंधित क्षेत्रों में संगठन के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसके अलावा, तकनीकी मोर्चे पर विभिन्न उपलब्धियों पर चर्चा की गई।

कार्यस्थल पर महिलाओं की यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध और निवारण) अधिनियम 2013 के तहत आंतरिक शिकायत समिति का गठन किया गया। सुश्री विधु ग्रोवर (बाहरी सदस्य) ने एनसीबी की महिला कर्मचारियों के साथ बातचीत की।

फायर डेमो ड्रिल का आयोजन किया गया जिसके दौरान, कर्मचारियों को आग के प्रकारों, इसके कारणों और परिसर में आग लगने की घटना के बारे में जानकारी दी गई।

फायर अलार्म सिस्टम का एक प्रदर्शन आयोजित किया गया, जिसके दौरान फायर अलार्म पैनल के संचालन के बारे में चर्चा हुई। परिसर में आग लगने की घटना होने पर उठाए जाने वाले कदमों पर भी चर्चा की गई।

# राष्ट्रीय सीमेंट एवं भवन सामग्री परिषद

(भारत सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के प्रशासनिक शासनाधीन)
34 कि.मी. स्टोन, दिल्ली–मथुरा रोड (एन.एच.–2), बल्लबगढ़–121 004, हरियाणा, भारत
दूरभाष : +91-129-2242525, 4192222, 2242051    फ़ैक्स : +91-129-2245968, 2242100
ई–मेल : dg@ncbindia.com, nccbm@ncbindia.com

**हैदराबाद इकाई**

एनसीबी भवन, ओल्ड बॉम्बे मार्ग, गाछीबावली
हैदराबाद–500 008, (तेलंगाना)

दूरभाष : +91-40-23180400, 23180426
फ़ैक्स : +91-40-23000343, 23006739
ई–मेल : hyd2_ncbhyd@bsnl.in

**अहमदाबाद इकाई**

समीत बंगलोस, प्लानेट हाउस के पीछे (पीएच–2)
शुकन शुभ–लाभ अपार्टमेंट के सामने, जज
बंगलोस मार्ग
बोडकदेव, अहमदाबाद–380 054, (गुजरात)

दूरभाष : +91-79-26855840
फ़ैक्स : +91-79-40305841
ई–मेल : brcncb@rediffmail.com

**एनसीबी भुवनेश्वर - परियोजना कार्यालय**

प्लॉट न. 145, ज़ोन–बी, शेड न. 4
आईडीसीओ सेंट्रल स्टोर
मानेस्वर औद्योगिक एस्टेट
भुवनेश्वर -751 010, (ओडिशा)

दूरभाष : +91-9010325172
ई–मेल : ncbodisha@gmail.com

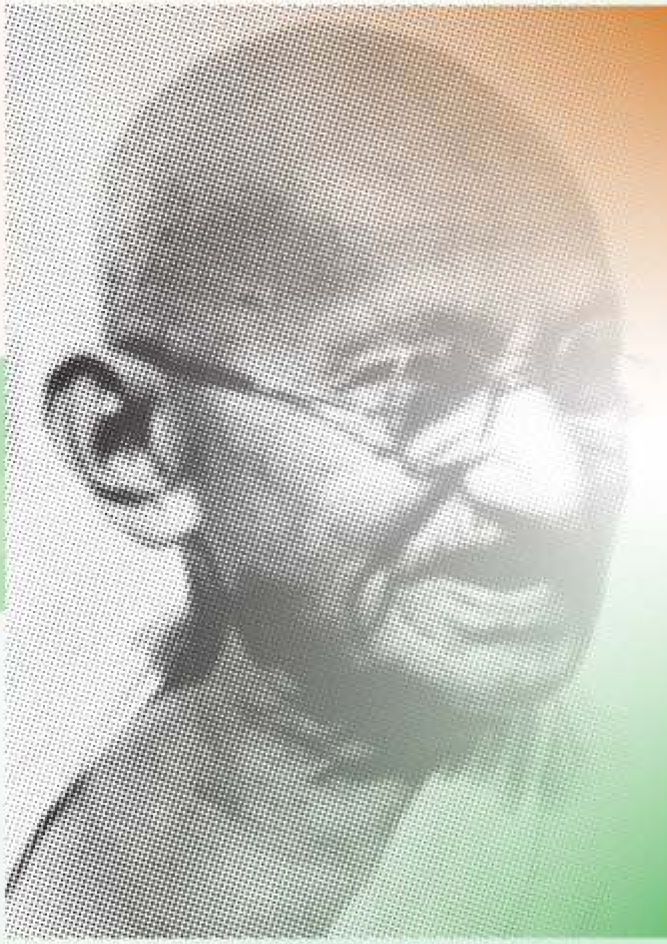

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिये आवश्यक है।

– महात्मा गांधी।

स्वच्छ भारत

एक कदम स्वच्छता की ओर